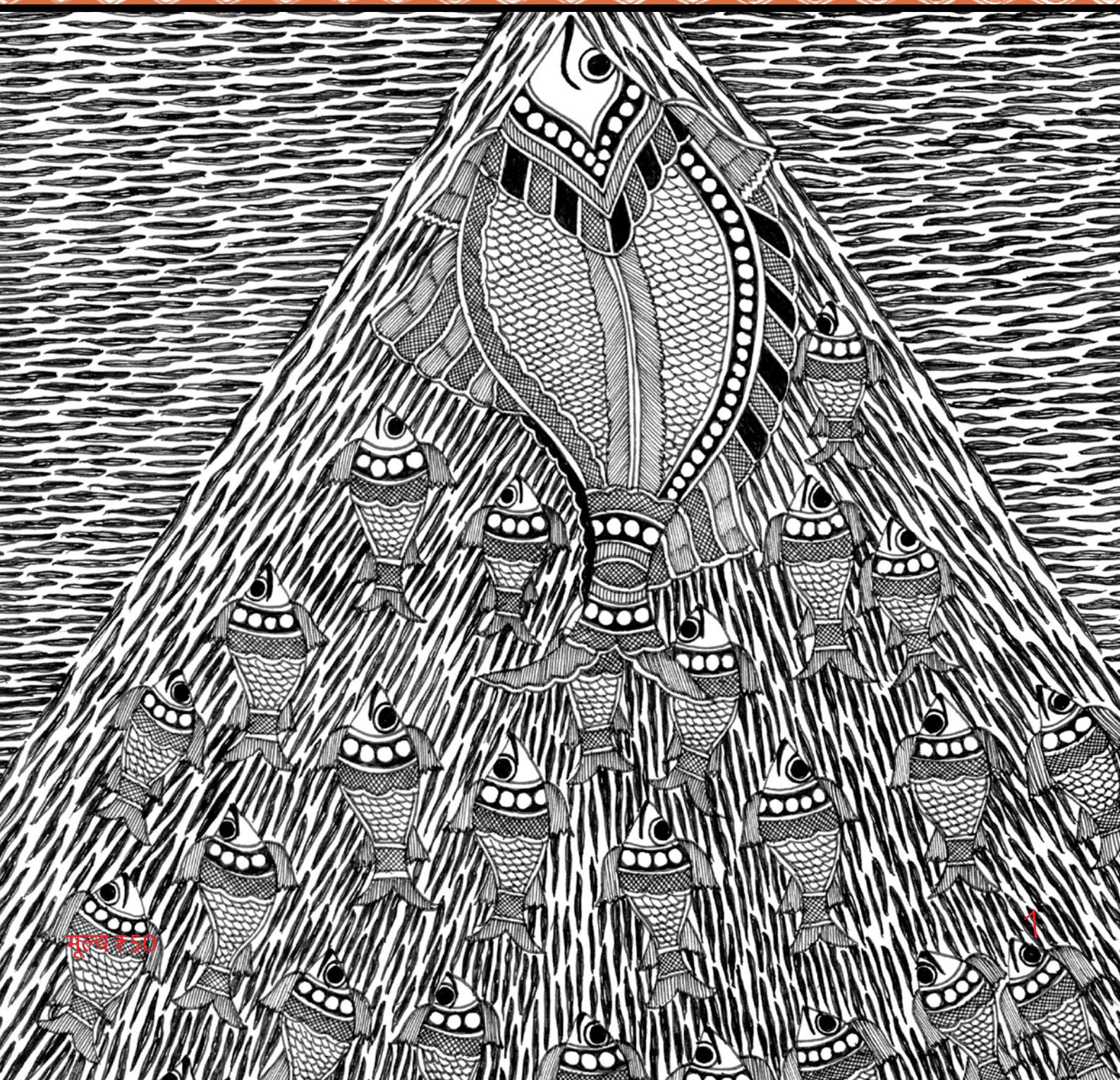


RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 सितम्बर 2025

अंक 468 ● सितम्बर 2025

चक्रमंक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50

1

मेरा पन्ना विशेषांक

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर-दिसम्बर अंक बच्चों का विशेषांक होता है। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे फैले होंगे। तो इस अंक के लिए अपनी रचनाएँ हमें ज़रूर भेजना।

ये कुछ विषय हैं जिन पर तुम अपनी रचनाएँ भेज सकते हो – लिखकर या चित्र बनाकर:

- अपने गाँव-शहर या गली-मोहल्ले की सबसे मजेदार जगह। यह भी बताना कि वह मजेदार क्यों है।
- पहला अनुभव – जब पहली बार अकेले सब्जी-दूध या कोई सामान खरीदने गए हो, या बिजली का बिल जमा करने या टिकट खिड़की पर खड़े होकर टिकट लेने गए हो आदि।
- अपने घर की किसी सबसे पुरानी चीज़ की कहानी (फोटो या चित्र सहित) – जैसे दादी-नानी के ज़माने का सरौता, घड़ी, सन्दूक, लालटेन या कोई भी और चीज़।
- तुम्हारा कोई ऐसा सीक्रेट जो तुम साझा करना चाहो।
- हम सभी सपने देखते हैं। अपने किसी सबसे खूबसूरत या डरावने सपने का चित्र बनाओ।
- अगर कोई व्यक्ति तुम्हारा सुपरहीरो है, तो बताना कि वह तुम्हारे लिए सुपरहीरो क्यों है।
- अपने पसन्दीदा लेखक/चित्रकार/कलाकार को चिट्ठी, यह बताते हुए कि तुम्हें उनकी किसी किताब/फ़िल्म/चित्र में क्या पसन्द है।
- अपने पसन्दीदा खेल का कोई रोमांचक मैच जो तुम्हें याद रह गया हो।
- किसी ऐसे पकवान की रेसिपी (उसकी फोटो/चित्र सहित) जो बाजार में नहीं मिलते।
- चकमक को चिट्ठी लिखो – हाल ही में पढ़े चकमक के अंकों में तुम्हें क्या अच्छा लगा? आगे तुम और क्या पढ़ना चाहोगे?
- क्यों-क्यों नवम्बर-दिसम्बर का सवाल -
क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पर लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा है?
इस दौरान तुमने क्या-क्या देखा? क्या अच्छा लगा और क्या बुरा, और क्यों?

इनके अलावा खुद की रची कहानियाँ-कविताएँ, किस्से, लेख, चित्र, चुटकुले, पैटिंग, कॉमिक के साथ-साथ तुम चकमक के अन्य कॉलम जैसे माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, तुम भी जानो, पुस्तक समीक्षा, फ़िल्म चर्चा और भूलभूलैया के लिए भी अपनी रचनाएँ ज़रूर भेजना।

ध्यान रखना कि फोटो खींचते वक्त चित्र किसी भी कोने से कटे नहीं और उस पर ठीक से रोशनी पड़े। कैमरे की सेटिंग में पिक्चर क्वालिटी हाई रेजोल्युशन पर रखना। और चित्र को वॉट्सऐप में डॉक्यूमेंट की तरह अटैच करके भेजना।

रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है - 5 अक्टूबर।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पूरा पता ज़रूर लिखना। रचनाएँ तुम 9753011077 पर वॉट्सऐप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

इस बार...

चक्रमङ्क

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 15

- आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी

डिब्बे में एक धनेष! - पीयूष सेक्सरिया

भूलभुलैया

गणित है मजेदार - चन्दा, शतरंज
और चावल के ढाने - आलोका कान्हेरे

तुम भी बनाओ - बोतल की नाव

खोई हुई पनडिब्बी - डॉ. मोहम्मद अरशाद खान

हाथी - प्रयाग शुक्ल

क्यों-क्यों

चित्रपटेली

ननकी और चोरू की दुनिया - लॉरेंस हूग

माथापच्ची

मेरा पत्ता

तुम भी जानो

मोटा मेंढक - निरंकार देव सेवक

4
6
10
11
17
18
22
24
28
30
34
36
43
44

एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

मेहमानजी कभी गए ही नहीं



आर एस रेश्व राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडपा, अनीता वर्गास और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वानाथन

चित्र: रवि जाभेकर



खल मुरिया/घमरा

वैज्ञानिक नाम: ट्राइडैक्स
प्रोकम्बेन्स (*Tridax procumbens*)

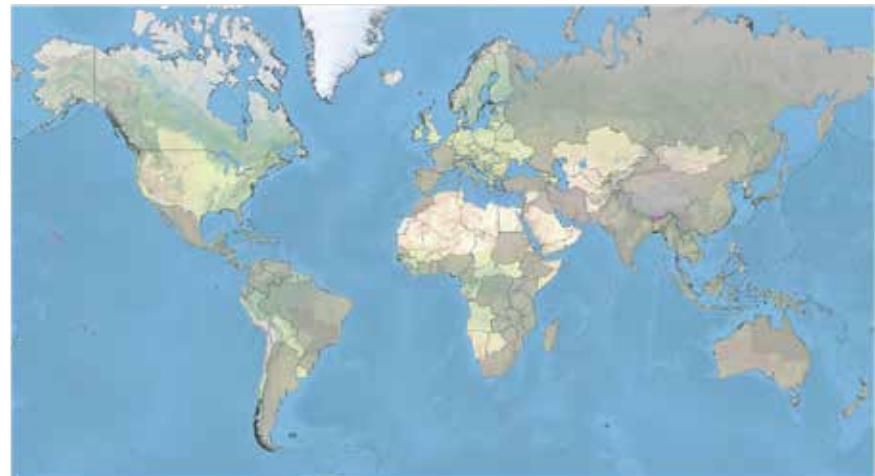
मूल: मध्य और दक्षिण
अमेरिका

कैसे पहुँचा: माना जाता है
कि इसे अनजाने में यहाँ
लाया गया है।

खल मुरिया एक बारहमासी औषधीय पौधा है। इसकी ऊँचाई 75 सेंटीमीटर तक हो सकती है। इसका निचला हिस्सा ज़मीं से सटकर फैलता है और उससे सीधी ऊपर उठती शाखाएँ निकलती हैं। इसका तना बैंगनी रंग का और सफेद रोएँ वाला होता है। खल मुरिया के पत्ते एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं। ये कुछ-कुछ मांसल होते हैं और इनके दोनों तरफ रोएँ होते हैं।



इसके फूल लम्बे डण्ठल (लगभग 5 से 9 सेंटीमीटर) पर अकेले खिलते हैं। इन डण्ठलों पर थोड़े-थोड़े और लम्बे रोएँ होते हैं। गुलबहार (Daisy) की तरह इसके फूलों के केन्द्र पीले होते हैं और पंखुड़ियों सफेद होती हैं। अक्सर इन्हें 'कुरी' (बाइडेन्स पिलोसा) समझ लिया जाता है। लेकिन खल मुरिया को हम उसकी तीन खण्डों वाली पंखुड़ियों से पहचान सकते हैं।



प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जगह दर्ज नहीं

*हालाँकि CABI (2023) से प्राप्त उपरोक्त नकशे में दिखाया नहीं गया है, पर प्रायद्वीपीय भारत में खल मुरिया को एक आक्रामक एलियन पौधे के तौर पर जाना जाता है।



असर

खल मुरिया विभिन्न किस्म के पर्यावरणों के अनुसार ढल जाता है। यह सड़कों और रेल की पटरियों के किनारे, बंजर ज़मीन, नदियों के किनारे, घास के मैदानों और रेत के टीलों पर पाया जाता है। यह एक कृषि खरपतवार है क्योंकि फसलों की पैदावार पर इसका असर पड़ सकता है। धान पर इसके एलीलोपैथिक असर होते हैं यानी खल-मुरिया कुछ ऐसे जैविक-रसायन बनाता है जो धान की उपज पर नकारात्मक असर डालते हैं।

यह फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कई कीटों के लिए वैकल्पिक मेज़बान भी होता है। इन कीटों में शामिल हैं – रुट नॉट निमैटोड, लाल मकड़ी घुन और एफिस सिट्रिकोला जो सिट्रस ट्रिस्टेज़ा वायरस का वाहक हैं।

बन्दोबस्त

खल मुरिया को हाथ से उखाड़कर, जुताई करके और उपयुक्त शाकनाशियों का उपयोग करके हटाया जा सकता है।

मुक्त

ऋग्मक

5

सितम्बर 2025

डिब्बे में एक धनेष!

पीयूष सेक्सरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन



फोटो: पीयूष सेक्सरिया

वो एक सुस्त रविवार की सुबह थी। मैं फेसबुक देख रहा था कि अचानक एक पोस्ट ने मेरा ध्यान खींचा। दिल्ली के लोधी गार्डन इलाके में सेर पर निकले किसी व्यक्ति को एक पेड़ के नीचे धनेष (Hornbill) का एक बच्चा मिला था। उसने उस बच्चे को उठाया और वहीं के एक दुकानदार से मिले डिब्बे में रख दिया। फिर उस व्यक्ति ने फेसबुक पर मदद की अपील की।

पोस्ट में दिए गए फोन नम्बरों की मदद से हमें पता चला कि अन्त में उसे हुमायूँ के मकबरे के पास के एक बाग के चौकीदार को सौंप दिया गया था। मैं और मेरा दोस्त अभिषेक गुलशन उसकी वैन से उस चिड़िया – या यूँ कहूँ कि उस चिड़िया के डिब्बे – को लेने निकल पड़े। थोड़ी पूछताछ के बाद हम सुन्दर नर्सरी के गेट पर तैनात एक गार्ड तक पहुँचे। उसने हमें थोड़े बड़े आकार का एक गत्ता सौंपा। हमने झाँककर देखा। उसके अन्दर एक प्यारा-सा, थोड़ा अजीब-सा दिखने वाला स्लेटी धनेष (Grey Hornbill) का बच्चा बैठा था।

बिना देरी किए हम सीधे फ्रेंडिकोज़ – वाइल्डलाइफ एसओएस पहुँचे। यह शहरी और आवारा वन्यजीवों का बड़ा उपचार केन्द्र है जो जंगपुरा के एक फ्लाईओवर के नीचे स्थित है। वहाँ काफी हलचल थी – मुख्यतः कुत्तों की। शायद उनमें से कुछ को हमारे धनेष की ही तरह कहीं से बचाया गया था। एक ही डॉक्टर एक साथ सात केस देख रहा था – वो भी समान तल्लीनता, दक्षता और सावधानी के साथ। हमारी बारी आने तक मुझे उस नन्हे धनेष के बारे में सोचने का काफी समय मिला।

वो एक भारतीय स्लेटी धनेष (Indian Grey Hornbill) था, जो दिल्ली के कुछ हिस्सों में आम तौर पर दिखाई देता है। अन्य धनेषों की तरह ये भी पेड़ों में प्राकृतिक रूप से बने कोटरों में अपना घोंसला बनाते हैं। मादा कोटर में घुसकर उसे अपने मल से बन्द कर देती है। उसी बन्द कोटर में वह अपने पंख गिराती है, अप्णे देती है, उन्हें सेती है और चूज़ों की देखभाल करती है। इस दौरान सारा भोजन नर ही जुटाता है। वह ना केवल मादा को, बल्कि हमेशा भूखे रहने वाले और तेज़ी-से बढ़ते

चूजों को भी खाना खिलाता है। जब चूजे थोड़े बड़े हो जाते हैं और घोंसले में जगह कम पड़ने लगती है, तब मादा कोटर को तोड़कर बाहर आ जाती है। और इस बार बच्चे, जो अब उतने भी छोटे नहीं रहे, कोटर को फिर से बन्द कर देते हैं। अब तक थककर चूर हो चुका नर भोजन जुटाने में मादा की मदद मिलने से राहत की साँस लेता है। और इस तरह जिन्दगी चलती रहती है।

खुशकिस्मति से, दिल्ली के कुछ हिस्सों जैसे कि लोधी गार्डन में आज भी ऊँचे-पुराने पेड़ों की भरमार है। ऐसी जगहों में धनेष आराम से रह पाते हैं। लेकिन दिल्ली समेत ज्यादातर शहरों में बड़े पेड़ों के काटे जाने से इनके लिए घोंसले बनाने की जगहें तेज़ी-से घट रही हैं। दिलचस्प (और थोड़ी चिन्ता की भी!) बात यह है कि धनेष विशेषज्ञ अजय गाडिकर ने इन्दौर शहर के बीचोंबीच एक बहुमंजिला इमारत की दूसरी मंज़िल पर बने एक छेद में भारतीय स्लेटी धनेष को घोंसला बनाते हुए पाया!

मैंने इस नन्ही चिड़िया की तस्वीरें अजय गाडिकर को भेजीं। उन्होंने बताया कि इसे उड़ान भरने में अभी करीब 15 दिन और लगेंगे। और शायद उड़ने की कोशिश में फुदकते-फुदकते यह नीचे गिर गया होगा।

धनेष को उनकी चोंच पर बने सींग (Horn) जैसे उभार 'कैस्क' के कारण यह नाम मिला है। भारत में धनेष की कुल नौ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से नरकोंडम धनेष केवल अण्डमान के पास के एक छोटे-से द्वीप नरकोंडम में ही मिलता है। वहीं ग्रेट धनेष दुनिया का सबसे बड़ा धनेष है। दोनों पंख पूरी तरह फैलाने पर इनकी चौड़ाई लगभग 5 फीट तक पहुँच जाती है।

धनेष को 'जंगल का किसान' भी कहा जाता है। ये फल को पूरा निगल जाते हैं और उनके बड़े बीजों को कुछ



घण्टे बाद थूक देते हैं, जबकि छोटे बीज इनकी बीट के साथ बाहर निकल जाते हैं। अपने साथी को लुभाने के लिए नर धनेष अलग-अलग किस्मों के अंजीर व अंजीर सरीखे अन्य फल मादा को तोहफे में देता है।

फल की तलाश में धनेष लम्बी उड़ानें भरते हैं और बीजों को जंगल में दूर-दूर तक फैला देते हैं। जंगल के कई पेड़ तो इसी तरह से विकसित हो गए हैं कि उनके बड़े, रसीले फल धनेष को लुभाएँ। अगर धनेष न रहें, तो ऐसे पेड़ों की कई प्रजातियाँ भी जंगल से विलुप्त हो सकती हैं।

फ्रेंडिकोज़ में इन्तज़ार करते हुए हमें समझ आया कि हमारा नन्हा धनेष सचमुच कितना प्यारा है – बड़ी-सी चोंच, छोटा-सा शरीर और सोच-विचार में ढूबी आँखें। बिना कोई विरोध किए वो चुपचाप डिब्बे में बैठा रहा।



फोटो: अजय गाडिकर



फोटो: पीयूष सेक्सरिया

डॉक्टर ने फटाफट उसकी जाँच की। हमसे पूछा कि वो हमें कैसे और कहाँ मिला और फिर अपने सहायकों को कुछ निर्देश दिए। सहायक डिब्बा उठाकर दूसरे कमरे में ले गए और एक्स-रे मशीन चालू की।

सोचकर देखो इतनी छोटी-सी चिड़िया की नन्ही-सी टाँग का एक्स-रे! उसे सही पोजीशन में रखने के लिए दो तकनीशियनों की ज़रूरत पड़ी। एक्स-रे रिपोर्ट जल्दी ही आ गई। हमें तो कुछ समझ नहीं आया। लेकिन विशेषज्ञों ने देखा कि उसकी एक टाँग थोड़ी अजीब तरह से मुड़ गई थी। पर बाकी सब ठीक था।

डॉक्टर ने उस टाँग पर पट्टी बाँधी और उसे सावधानी से डिब्बे में रखा। फिर एक्स-रे रिपोर्ट को लिफाफे में रखकर उस पर एक कोड लिखा। मुझसे एक फॉर्म भरवाया और डिब्बा और लिफाफा हमें दे दिया। उनके कहे अनुसार मैंने यह सब उनकी वाइल्ड एनिमल केयर टीम को सौंप दिया।

अब उस नन्ही चिड़िया से विदा लेने का समय आ गया था।

इसके बाद उसका क्या हुआ, पता नहीं। मैं जानना तो चाहता था, लेकिन मुझे समझ आ गया था कि फ्रेंडिकोज जैसे संगठनों के लिए, जहाँ रोज़ इतने सारे जानवर आते हैं, हरेक जानवर की जानकारी देना बहुत मुश्किल है। लेकिन इतना तो तय था कि हमारा नन्हा साथी अब सुरक्षित हाथों में था व उसकी अच्छी देखभाल हो रही होगी। हम यही उम्मीद कर सकते हैं कि वो अब दिल्ली के ऊँचे पेड़ों के बीच कहीं उड़ रहा होगा।

फोटो: कनक शशि



जब तुम्हें कोई नन्ही चिड़िया मिले!

जब तुम्हें कोई चिड़िया
का बच्चा दिखे, तो तुरन्त
उसकी मदद करने मत दौड़ो।
पहले देखो कि उसे सच में मदद चाहिए
भी या नहीं। और खुद मदद करने के बजाय
किसी बड़े व्यक्ति से मदद माँगो।

सबसे पहले देखो कि वो फ्लेजलिंग है,
हैच्लिंग है या नेस्टलिंग। अगर उसकी आँखें
खुली हैं और वो हिल-डुल रहा है तो समझो वो
बिलकुल ठीक है। यदि वो धायल न हो, उसका
घोंसला टूटा न हो, या तुमने किसी जानवर को
उस पर हमला करते न देखा हो, तो उसे वैसे ही
रहने दो।

हैच्लिंग या नेस्टलिंग का घोंसले से बाहर
होना असामान्य बात है। यदि ये ज़मीन पर दिखें
तो आसपास इनका घोंसला ढूँढ़ो। अगर घोंसला
सही सलामत हो तो बच्चे को उसमें वापस रख
दो। अगर घोंसला टूट गया है या दिखाई न दे तो
पास ही एक नया घोंसला बनाओ। इसके लिए
छोटे डिब्बे या कम ऊँचाई वाले किसी बरतन में
सूखी घास-पत्तियाँ बिछा दो।



हैच्लिंग (hatching) - यदि चिड़िया के बिलकुल भी पंख नहीं हैं, तो वो हैच्लिंग है।

फटो: इश्किता देवनाथ विश्वास



नेस्टलिंग (nestling) - यदि थोड़े बहुत पंख हैं, तो वो नेस्टलिंग है।



फ्लेजलिंग (fledgling) - यदि पंख निकल चुके हैं और वो उड़ना सीख रहे हैं, तो वो फ्लेजलिंग हैं। ये अक्सर ज़मीन पर दिखाई दे जाते हैं।

चिड़िया को हल्के हाथों से उठाओ। इसके लिए उँगलियाँ बन्द रखते हुए हाथों की प्याली जैसी बनाओ और दबाओ बिलकुल मत। अगर वो ठण्डा लगे, तो कुछ मिनटों तक उसे अपने हथेलियों की गर्माहट दो। यह मत सोचना कि तुम्हारी गन्ध से उसके माता-पिता उसे छोड़ देंगे। इन्सान के छूने से चिड़ियाँ अपने बच्चों को नहीं छोड़ते। फिर उसे घोंसले में रखकर दूर से देखते रहो।

यदि एक घण्टे तक उसके माता-पिता में से कोई न आए या फिर चिड़िया बड़ी या घायल हो, तो नज़दीकी वन्यजीव बचाव केन्द्र को कॉल करो। उसे डराए बिना उसकी एक फोटो लो। फिर वो फोटो और उस स्थान की जानकारी बचाव केन्द्र के नम्बर पर भेजो। उसे रखने के लिए गते का डिब्बा या पेपर बैग लो। उसमें छोटे-छोटे छेद कर दो। बैग या डिब्बे के अन्दर टिशू पेपर या मुलायम कपड़ा बिछाओ।

चिड़िया को पकड़ने के लिए कम्बल या तौलिए का इस्तेमाल करो। पीछे से धीरे-धीरे पास जाओ और उसके

पंखों को शरीर से सटाते हुए पकड़ो। उसे कुत्ते-बिल्लियों और कौवों की पहुँच से दूर किसी शान्त व सुरक्षित जगह पर रखो। उस पर नज़र रखो और बचावकर्मी के आने तक इन्तज़ार करो। अगर तुम्हें वहाँ से जाना ही पड़े तो चिड़िया को किसी ज़िम्मेदार व्यक्ति को सौंपो और उसका नम्बर हेल्पलाइन को भेजो।

बिना पूछे चिड़िया को फर्स्ट एड देने की कोशिश मत करो। उसे खाना या पानी मत दो जब तक कि तुम्हें ऐसा करने के लिए कहा न जाए। ज़बरदस्ती खाना खिलाने से उसे घुटन और फूट पॉइंजिंग हो सकती है। इसी तरह उस पर पानी डालने या ज़बरदस्ती पानी पिलाने से उसे निमोनिया या हाइपोथर्मिया हो सकता है। उसे गाय का दूध या शहद भी बिलकुल मत देना। इससे उसके विकास पर बुरा असर पड़ता है और उसे दस्त हो सकते हैं। उसे बार-बार छूना या ज़्यादा फोटो लेना भी ठीक नहीं है। इससे उसे तनाव हो सकता है और कभी-कभी तनाव से भी उसकी मौत हो सकती है। शान्त रहो, चिड़िया को भी शान्त रखो, भीड़ से बचाओ और हमेशा दिए गए निर्देशों का पालन करो।



चीं-चीं, चीं-चीं, कहाँ हो तुम?



चीं-चीं, चीं-चीं, मैं तुम तक कहसे पहुँचूँ



खुम्ख

10

सितम्बर 2025

गणित है

चन्दा, शतरंज और चावल के दाने

आलोका कान्हेरे

अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

मळदास



चन्दा को
गणित के सवाल हल करना
बहुत पसन्द था।

साथ ही उसे जानवरों, खासकर
हाथियों की देखरेख में बहुत
दिलचस्पी थी।

वह महल में राजा के हाथियों की
देखरेख का काम करती थी।

एक बार चन्दा के गाँव में अकाल पड़ा। लोगों के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा।
जब लोग भूख से तड़प रहे थे तब भी राजा के गोदाम चावल से भरे पड़े थे।
लेकिन वह किसी की मदद नहीं कर रहा था।



उसी दौरान राजा की प्रिय हथिनी मीशा बीमार हो गई।
राजा को मीशा की बहुत चिन्ता हो रही थी।
उसने चन्दा को मीशा की देखरेख के लिए बुलाया।



अगर मीशा ठीक हो गई तो
तुम जो माँगोगी मैं तुम्हें दूँगा।



चन्दा ने मीशा का अच्छे से ध्यान रखा।
मीशा बल्दी ही ठीक हो गई।



कितना चावल?

महाराज,
मुझे चावल चाहिए।



शतरंज के पहले चौकोर के लिए
चावल के 2 दाने, दूसरे चौकोर के
लिए 4 दाने, तीसरे चौकोर के लिए
8 दाने और इसी तरह आगे भी।

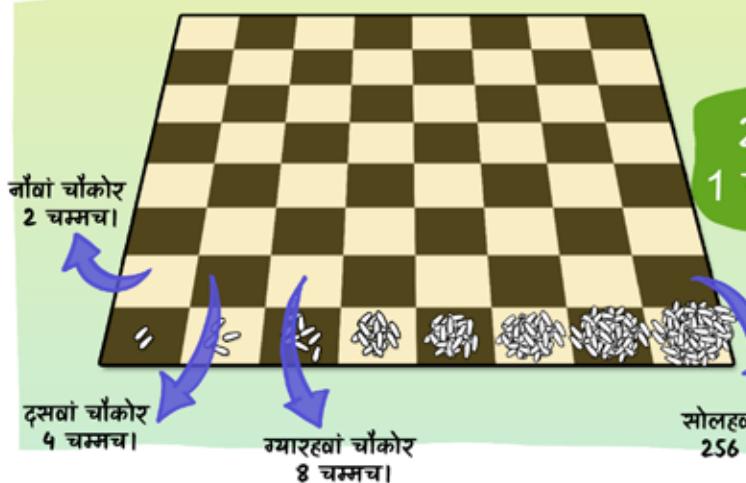
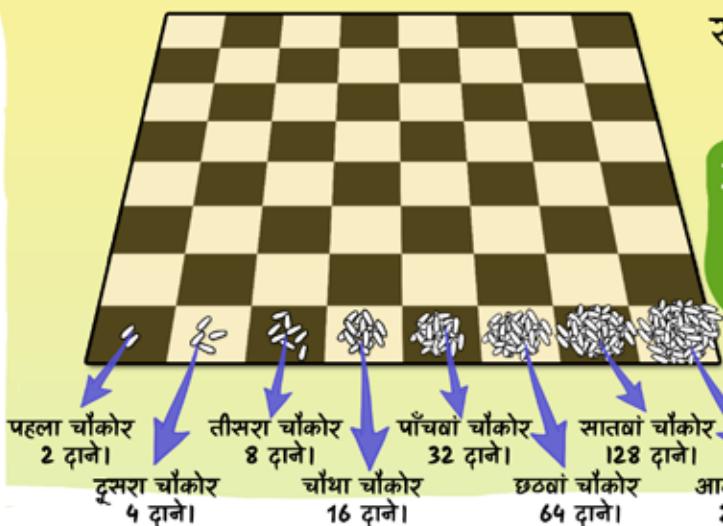
चन्दा कितनी बेवकूफ हैं। वो
कुछ भी माँग सकती थी। पर
वो सिर्फ चावल के चन्द दाने
माँग रही हैं।

जैसी तुम्हारी
मजी!

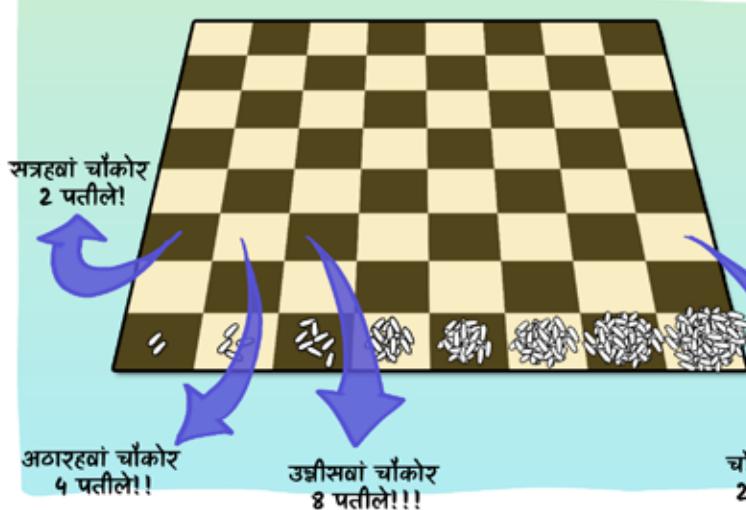


राजा ने सैनिकों को चावल के दाने गिनने का आदेश दिया।

256 दाने लगभग 1 चम्मच चावल के बराबर होते हैं। तो अब आप गिनने के लिए चम्मच का इस्तेमाल कर लो।



256 चम्मच चावल के दाने लगभग 1 पतीला चावल के दानों के बराबर होंगे।



चावल के 256 पतीले चावल से भरी 1 हाथ-गाड़ी के बराबर होते हैं...



महाराज! 40 वें चौकोर के आते-आते कुछ गोदाम खाली हो गए हैं!! अभी तो 24 चौकोर बाकी हैं!!



माफ करजा। मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें
बो दे पाऊँगा, जो तुमने माँगा था। तुम
कुछ और माँग लो।

कृपया अपने राज्य के लोगों की
मदद कीजिए। उन्हें उतना चावल दे
दीजिए, जितना उन्हें चाहिए।



राजा ने तुरन्त ही चन्दा की बात मान ली। और इस तरह¹
राज्य के हर व्यक्ति को कम से कम उतना चावल मिल गया,
जितने की उनको ज़रूरत थी।



मगर ब्रा सोचो कि चन्दा ने यही संख्याएँ क्यों चुनीं?
क्या खास हैं इन संख्याओं में?

चॉकोर की संख्या	चावल के दानों की संख्या
1	2
2	4
3	8
4	16
5	32
6	64
7	128
8	256
9	512
10	1024
11	2048
12	4096
13	8192
14	16384
15	32768
16	65536
17	131072
18	262144
19	524288
20	1048576

चलो, दानों की संख्या को तालिका में लिखकर देखते हैं।

अरे!!

बीसवें चॉकोर तक चन्दा के पास तो चावल के दस लाख से ब्यादा दाने होंगे!

क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि दस लाख दाने मतलब कितना किलोग्राम चावल होगा? तुम पचास ग्राम चावल में दानों की संख्या गिन सकते हो।

और इस संख्या को 20 से गुणा करके 1 किलोग्राम चावल में दानों की संख्या पता कर सकते हो। (सोचो कि हमने 20 से ही गुणा क्यों किया?)

अनुमान लगाओ कि चौसठवें चॉकोर के लिए चन्दा को चावल के कितने दाने मिलते?



क्या तुम चन्दा की संख्याओं ($2, 4, 8, 16, \dots$) और संख्याओं $4, 12, 36, 108$ में कोई समानता देख सकते हो?

ध्यान से देखो, संख्याओं के इन समूहों में अगली संख्या पहले वाली संख्या को किसी खास संख्या से गुणा करने पर मिलती है।

संख्याओं के इन समूहों को
गुणोत्तर श्रेणी (Geometric Progression,
संक्षेप में GP) कहते हैं।

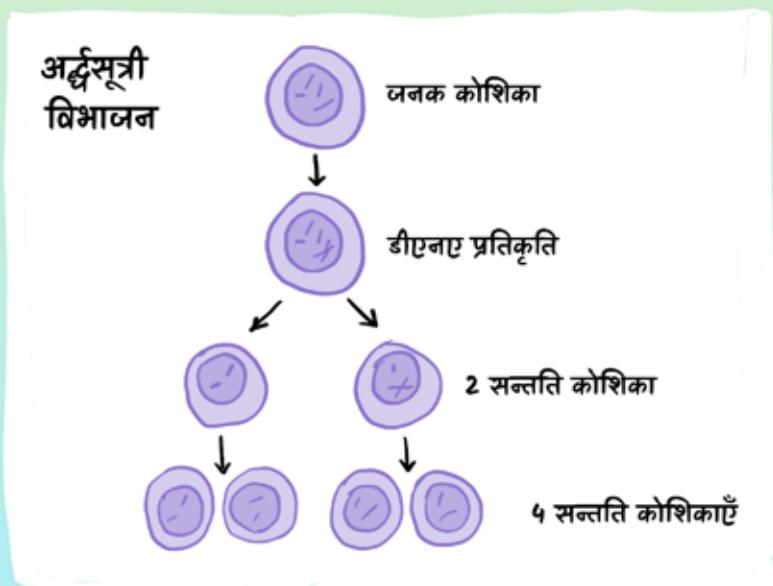
$$2, 4, 8, 16$$

$\times 2$ $\times 2$ $\times 2$

$$4, 12, 36, 108$$

$\times 3$ $\times 3$ $\times 3$

कोशिका विभाजन (cell division) या अर्द्धसूत्री विभाजन में प्रत्येक स्तर पर
जनक कोशिकाएँ जनक कोशिकाओं की संख्या की दुगुनी होती हैं।
नीचे दिया गया चित्र देखो।



हमने देखा कि कैसे चंदा ने GP का उपयोग करके राजा को सबक सिखाया।
GP को हम हमारी रोक्तमर्दी की कई परिस्थितियों में देख सकते हैं।
तुम भी ऐसी और परिस्थितियाँ खोजने की कोशिश करना।

तुम्हारी ओ

बोतल की नाव



1

मीडियम साइज़ की दोनों बोतलों को टेप की मदद से आपस में चिपका लो।



2



जुगाड़: प्लास्टिक की चार बोतलें
- दो मीडियम साइज़ की और दो
छोटी, गुब्बारा, स्ट्रॉ और टेप



3

स्ट्रॉ के एक सिरे पर गुब्बारे का मुँह पहले गोंद से चिपका लो और फिर उस पर कसकर टेप लपेट लो। अब इस स्ट्रॉ को छोटी बोतलों के बीच फँसाकर अच्छी तरह चिपका लो।

4



लो, हो गई तुम्हारी नाव तैयार! इसे पानी में रखो और स्ट्रॉ के खुले सिरे से गुब्बारे को फुलाओ। देखो फिर क्या होता है?



खोई हुई पनडिल्ली

डॉ. मोहम्मद अरशद खान
चित्र: शुभम लखेरा

सारा बखेड़ा उस दिन से शुरू हुआ, जिस दिन दादामियाँ घर आए। दादामियाँ यानी हमारे दादाजान के बड़े भाई। वे रुके तो बमुशिकल आधा दिन, पर हमारे लिए कई दिनों की हलचल छोड़ गए।

पिछले कई दिनों से दादाजान से उनकी बात हो रही थी। “आऊँगा-नहीं आऊँगा” के बीच पूरा हफ्ता गुज़र गया था। किसी दिन कहते, “ज़र्लर आऊँगा। बहुत दिन हो गए तुम सबको देखो।” पर अगले रोज़ उनका सुर बदल जाता, “रऊफ और नन्हे तो आएँगे ही, मैं भी साथ चला आऊँ तो घर पर कौन रहेगा?”

दरअसल उनके पोते को सऊदी में नौकरी मिल गई थी। खानदान का पहला शब्द वतन से बाहर जा रहा था, इसलिए खुशी भी थी और फिक्र भी। सबकी आँखें उसे सही-सलामत जाते देखने का सुकून चाहती थीं। दादामियाँ भी इसी पशोपेश में थे। “जाऊँ, न जाऊँ” के बीच उनका इरादा गर्दिश कर रहा था। पर वे अपने दोनों बेटों के साथ लखनऊ गए और लौटते में घर भी आए।

उस दिन आना तो उहँ था ही। पर उम्मीद थी कि ऐशबाग में अपने दोस्त इस्माइल टिम्बरवाले से मिलते हुए वे शाम तक आएँगे। दादाजान को भी बीच में फोन करने का ध्यान नहीं रहा। अभी साढ़े दस बजे थे और सुबह की चाय का जायका फीका भी नहीं पड़ा था कि उनका फोन आ पहुँचा।

फोन सुनते ही दादाजान के चेहरे का रंग उड़ गया। पूरे घर में हड्डबड़ी मच गई। यह उठा, वह रख। तखत पर नई चादरें बिछाई जाने लगीं। घर का अल्लम-गल्लम पर्दों के पीछे छिपाया जाने लगा, झाड़ू की खरर-खरर गूँजने लगी।

“जाले साफ करो, जाले,” दादाजान अपनी दुखती कमर लिए चिल्ला रहे थे। दादी उन्हें कमरे में जाकर लेटे रहने की हिदायत दे रही थीं कि दर्द फिर से न उभर आए। पर दादाजान इतने बेचैन थे कि अब्बी के हाथों से लगी खींच लेने को उतारू थे।

घर का हंगामा अपनी अधूरी राह में ही था कि दरवाजे पर इनोवा का हॉर्न बज उठा।

“आ गए..., आ गए... भाईजान की ही गाड़ी है।” दादाजान बदहवास चेहरा लिए बोले।

दादामियाँ ही थे। लम्बे सफर के बावजूद वे लकड़क कुर्त-पाजामे में गाड़ी से उतरे। उनके पीछे-पीछे दोनों बेटे और एक पोता भी घर में दाखिल हुआ। दादाजान लपककर गले लगे।

सलाम-दुआ के बाद दादाजान को देखते ही वे तपाक से बोले, “अमाँ मियाँ, ये क्या हाल बना रखा हैं?”

“कुछ नहीं भाईजान, सब ठीक है, सब ठीक है। मजे में हूँ, सब ठीक है।” दादाजान अपनी बातों को इस तरह दुहरा रहे थे, जैसे अल्फाज़ चुक गए हों। हमेशा तुर्म खां बने रहनेवाले चिड़चिड़े दादाजान को इस तरह देखना घरवालों के लिए हेरत भरा था।

“क्या ठीक है? तुम्हारा चेहरा तो ऐसा हो गया है कि बगल खड़ा होऊँ तो लोग तुम्हें बड़ा भाई कह दें। हालत सुधारो। बालों में मेंहदी लगा लिया करो। हफ्ते, दो हफ्ते में दाढ़ी तराशवा



लिया करो। एकदम बीमारों जैसा हाल बना रखा है।” दादामियाँ उँगली रगड़कर धूल देखते हुए कुर्सी पर बैठ गए और बोले, “खैर, कमर का दर्द कैसा है?”

दादाजान तो जैसे कमर का दर्द भूल ही चुके थे। तखत के किनारे सिमटे-सकुचाए बैठते हुए बोले, “ठीक है, भाईजान। अब इतनी राहत है कि थोड़ा बहुत चल-फिर लेता हूँ।”

“अमाँ यार...” दादामियाँ कुर्सी की टेक लेते हुए झुँझलाहट से बोले, “हड्डी-गुड्डी का सालन पियो, गोंद के लड्डू बनवाकर खाओ। मुझे देखो कमोबेश तुमसे छः साल बड़ा होऊँगा। कमर दर्द तो क्या, सिर दर्द

भी पास आते घबराता है। लगता है सलमा तुम्हारे खाने-पीने का ध्यान नहीं रखतीं।”

“अरे! नहीं भाईजान, मैं तो कहते-कहते थक जाती हूँ, ये ही कुछ नहीं खाते” दादी ने पर्दे की ओट से सफाई दी।

दादामियाँ ठहाका लगाकर हँस पड़े। तब तक गुड्डन पानी की ट्रे ले आई थी। दादाजान उसे खा जानेवाली निगाहों से धूर रहे थे क्योंकि ट्रे के नीचे प्याज का छिलका चिपका दिख रहा था। कहीं सलीका पसन्द दादामियाँ ने देख लिया तो?

खैर उन्होंने नहीं देखा या देखकर भी नज़रअन्दाज किया, कौन जाने? नफासत से गिलास उठाया और दो-तीन धूँट पीकर वापस रखते हुए बोले, “कैसी हो बेटा, इंटर तो हो गया होगा?”

“जी, ग्रेजुएशन भी कम्प्लीट हो गया। एम.एससी. में एडमीशन लिया है” गुड़डन सिर पर बमुश्किल दुपट्टा सँभालते हुए बोली।

“माशाअल्लाह...” दादामियाँ ने दुआ के लिए हाथ बढ़ाया तो गुड़डन ने सिर आगे कर दिया, “हमारी बिटिया इतनी बड़ी हो गई! खूब पढ़ो-लिखो, कौम की खिदमत करो। अल्लाह खूब तरक्की दे, खुश रखो।”

गुड़डन दुआ पाकर निहाल होते हुए लौटी।

“और हाँ,” पीछे से उन्होंने आवाज़ दी, “अम्मी से कहना खाना मत बनाएँ। हम लोग बस थोड़ी ही देर में निकलेंगे। घर पर बहुएँ अकेली हैं।”

“ऐसा कैसे हो सकता है, भाईजान?” दादाजान मिनमिनाएँ, “इतने दिन बाद आए हैं। दो-एक दिन तो रुकिए ही।”

दादामियाँ कुछ नहीं बोले। बस, सुनहरी चेनवाली कलाई घड़ी पर नज़र डाली और बोले, “रऊफ, नन्हे, यहाँ से ऐसे निकलेंगे कि मगरिब से पहले घर पहुँच जाएँ।”

खैर, दोपहर का खाना हुआ। दादामियाँ ने सब बच्चों और बहुओं को रुपए बाँटे और सबसे विदा लेकर गाड़ी में जा बैठे। पल भर में गाड़ी गलियारा पार कर गई।

बस, सारे हंगामे की शुरुआत यहीं से हुई।

दादामियाँ के जाते ही दादाजान बोले, “भाईजान के सामने आज भी हालत खराब हो जाती है। अब्बा के गुजर जाने के बाद वही तो हमारे बुजुर्ग हैं।” कहते-कहते उन्होंने दादी की तरफ हाथ बढ़ाया, “अच्छा अब ज़रा पान की डिबिया तो लाओ। जाने कहाँ छिपा दी। भाईजान के लिहाज़ में सुबह से नहीं खाया। मुँह फीका हो रहा है।”

“मुझे क्या पता। आपने ही कहीं रखी होगी।” दादी सिर से सरकाकर दुपट्टा गले में डालती हुई बोलीं।

दादाजान तड़प उठे, “अरे! साफ-सफाई तो तुम लोगों ने की। मैंने तो कुछ छुआ भी नहीं।”

वह बैचैनी से इधर-उधर अपनी डिब्बी तलाशने लगे।

“अपने कमरे के पास भला किसी को फटकने भी देते हैं आप? कोई क्यों छुएगा आपकी डिब्बी?”

“सफाई तो तुम्हीं लोगों ने की थी।” दादाजान बैचारगी से चिल्लाएँ।

गुड़डन और अब्बी को बुलाया गया, जिनका आज की साफ-सफाई में सबसे अहम रोल था।

“हमने तो चादर हटाकर नई चादर बिछा दी थी बस। हमें तो कुछ भी नहीं दिखा।” दोनों ने बताया।

तब तक दादी गुसलखाने में पड़ी चादर उठा लाई और झाड़ते हुए बोलीं, “इसमें भी नहीं है।”

“पान की डिबिया है, कोई सुई नहीं,” दादाजान झल्लाकर बोले।

दादी भुनभुनाते हुए चली गई, “एक तो मदद करो ऊपर से बातें भी सुनो। यहीं ज़माना है।”

शक की सुई अब सिराज और शिबू पर धूमी। ज़रूर खेल के चक्कर में उठा ले गए होंगे। जब वह ‘खट्ट’ से खुलती है और ‘चट्ट’ की आवाज़ करते हुए बन्द होती है तो बड़ा मज़ा आता है। लेकिन उन दोनों ने भी मासूमियत से इनकार कर दिया। उनकी शकलों को देखकर भी लगता था कि ये काम उनका नहीं होगा। फिर भी दादाजान ने गुड़डन को पीछे लगाया कि उनके खिलौनों की टोकरी की तलाशी ले।

जब वहाँ भी डिबिया नहीं मिली तो दादाजान की सुई धूम-फिरकर फिर दादी पर अटक गई, “पक्का यही होंगी। मेरे पान खाने से इन्हीं को दिक्कत है। इधर न थूको, उधर न खँखारो। जब देखो तब टोका-टाकी।”

दादी तैश में कमरे से लपकती आई, “मौलवी की बेटी हूँ। रखना-उठाना तब न किया जब बच्ची थी, अब आखिरी वक्त में क्या आकबत बिगड़नी है।”

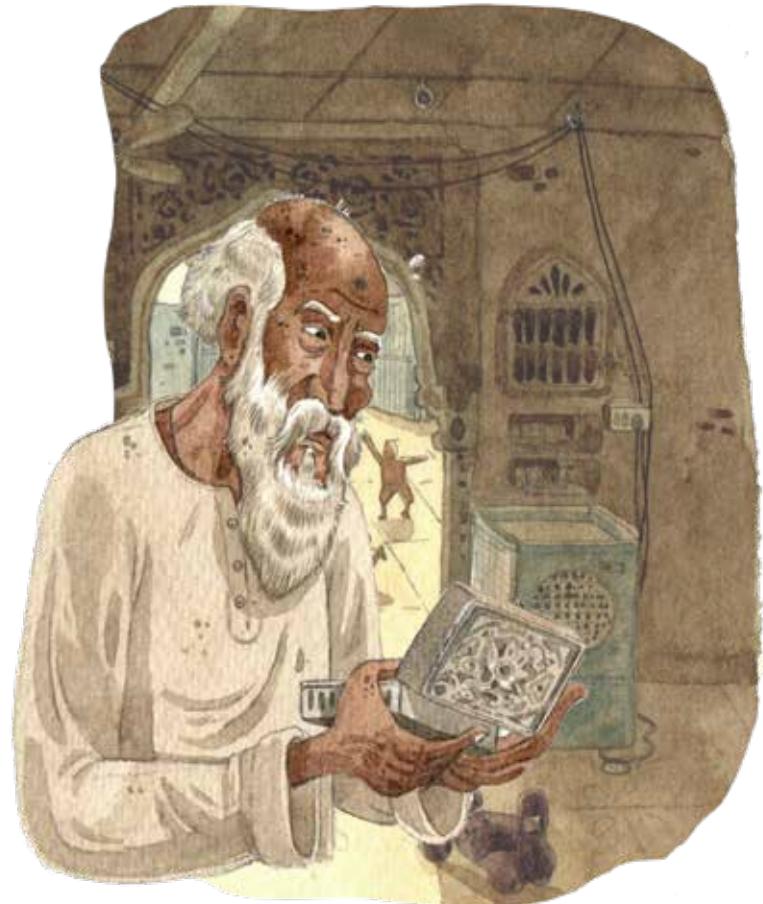
सारी खोजबीन के बाद भी पान की डिबिया न मिली। मुरादाबादी पीतल की वो चमचमाती डिबिया दादाजान को बेहद प्यारी थी। कभी किसी की बारात में मुरादाबाद गए थे, तो वहीं से ले आए थे। घर पर कोई पान खाता नहीं था। दादी पीक से होने वाली गन्दगी के सख्त खिलाफ थीं। इसलिए गिल्लू की गुमटी से सुबह ही उनके लिए पान लगाकर आ जाते थे। दादाजान एक-एक बीड़ा डिबिया में बिछे तर मलमल पर सहेजकर रखते और इत्मीनान से खाते रहते।

पान की डिबिया आखिर गई कहाँ? यह घरवालों के लिए भी बड़ा सवाल था।

दादाजान की खुशनूदी हासिल करने के लिए सब उसे टूँडने में लग गए। दादी खुद भी बेचैनी से लगी हुई थीं क्योंकि कसमें खा लेने के बावजूद दादाजान का सारा शक उन्हीं पर था। अबू जिन्हें काहिल और नाकारा का खिताब हासिल था, वे भी इस मुहिम का हिस्सा बने हुए थे। पान की डिबिया खोजकर अपनी लियाकत साबित करने का इससे बेहतर मौका उन्हें शायद ही कभी मिलता।

लेकिन घर भर की कोशिशों के बाद भी पान की वो डिबिया नहीं मिली। अबू बाजार से एक नई डिबिया लेकर आए, पर दादाजान ने उसकी तरफ देखा तक नहीं।

कुछ दिनों बाद की बात है। एक दिन दादाजान ने गद्दे को सही करते हुए यों ही नीचे हाथ फिराया कि उनका जी धक से रह गया। एक पुराने फिल्मी रिसाले में लिपटी पान की डिबिया गद्दे के नीचे दबी थी। पुरानी बातें एकाएक रील की तरह दिमाग में घूम गई। दादामियाँ का फोन पाते ही हड्डबड़ी में रिसाला उठाकर गद्दे के नीचे

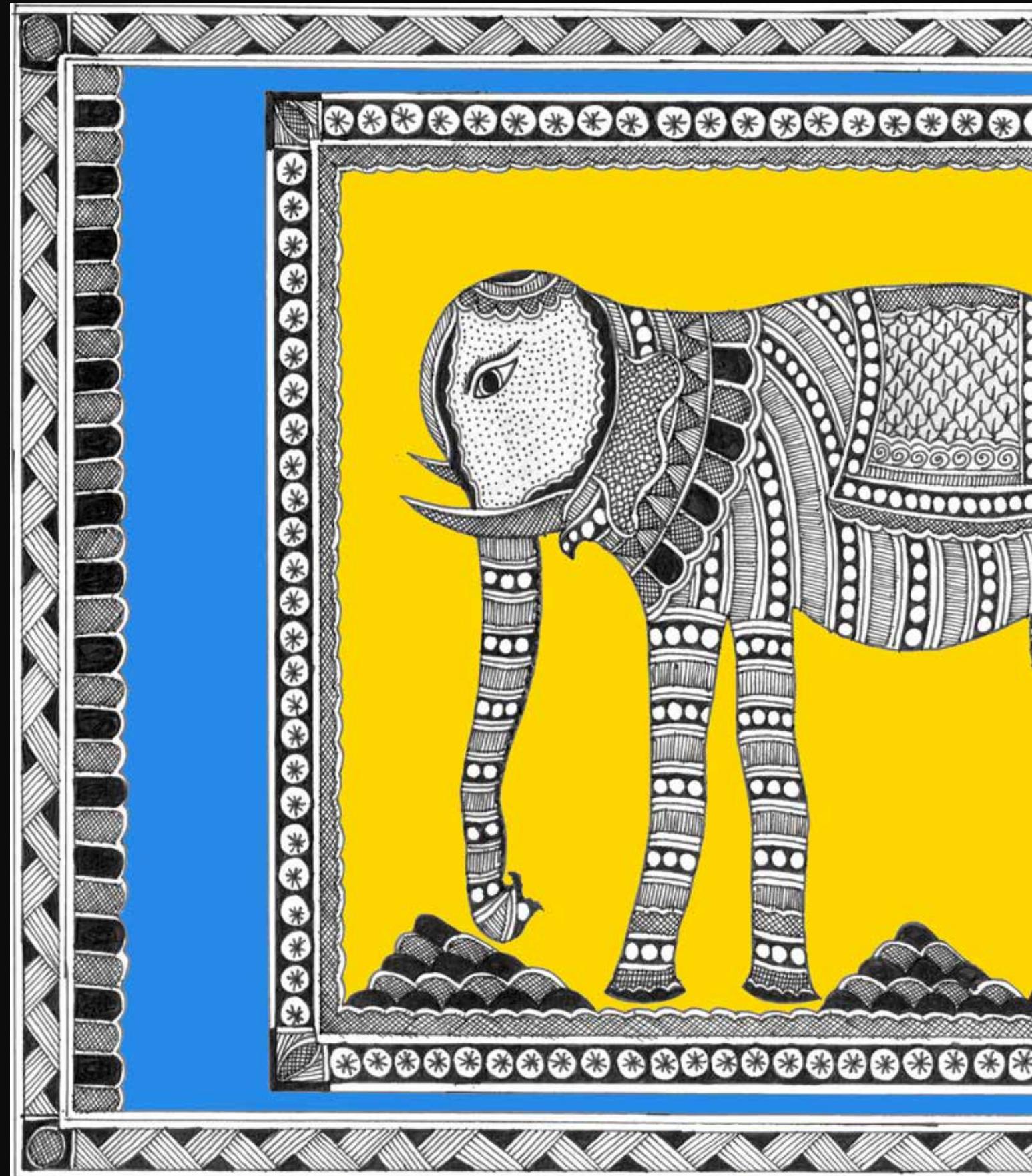


दबा दिया था। यह सोचकर कि दादामियाँ देख लेंगे तो क्या कहेंगे? हड्डबड़ी में खबर भी न हुई कि रिसाले के भीतर पान की डिबिया रखी है।

पान की डिबिया हाथ में लिए वे हैरत और शर्मिन्दगी से टुकुर-टुकुर ताक रहे थे। डिबिया को लेकर इतना तिल का ताढ़ बन चुका था कि किसी को बताने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

दादाजान ने इधर-उधर नज़र घुमाई। आस-पास कोई नहीं था। उन्होंने डिबिया को नज़र भर देखा, मुहब्बत से हाथ फिराया और हाथ बढ़ाकर उसे और गहराई में दबा दिया। उस दिन के बाद उन्होंने फिर कभी पान की डिबिया के बारे में चर्चा नहीं की।

घरवालों के लिए आज भी यह राज़ है कि पान की डिबिया आखिर गई कहाँ।

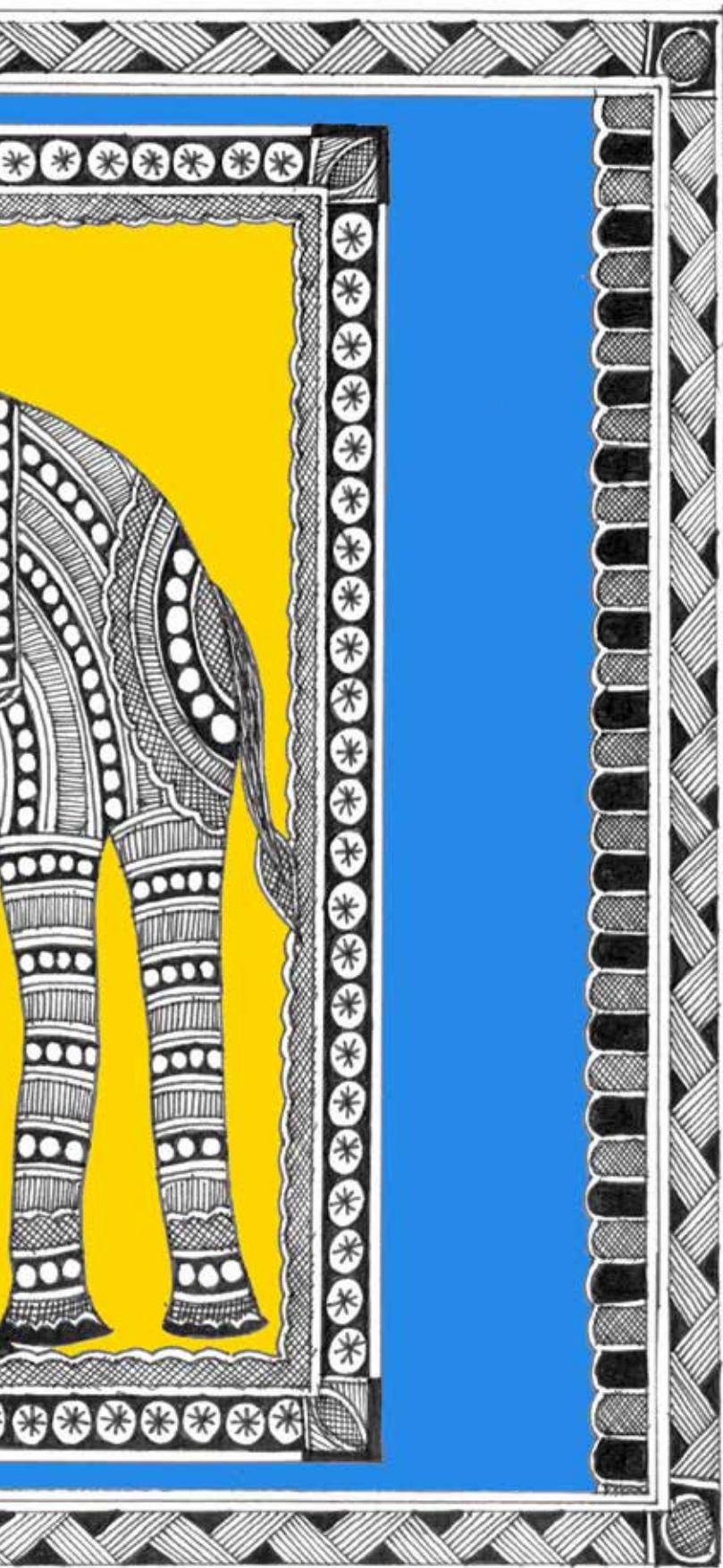


हाथी

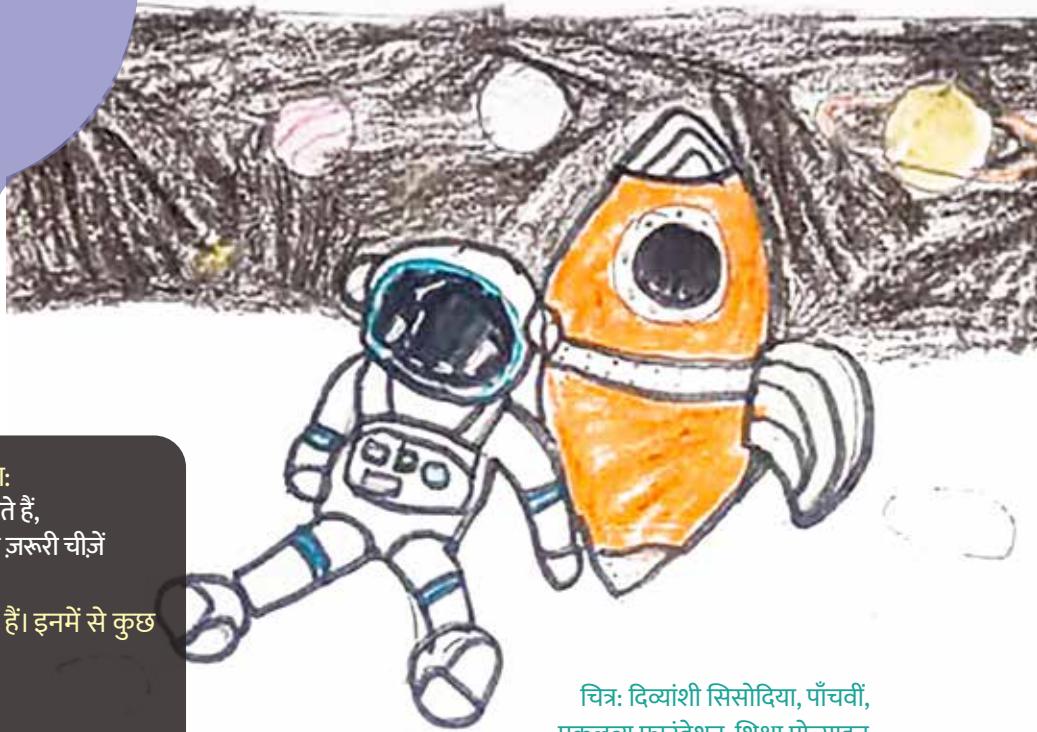
प्रयाग शुक्ल

चित्र: नरेश पासवान

हाथी आता झूमके
धरती मिट्टी चूमके
कान हिलाता आता है
गज्जे, पत्ते खाता है
देखो इसके लम्बे दाँत
मुँह के अन्दर दूसरी पाँत
आँखें इसकी छोटी-छोटी
सूँड तो इसकी काफी मोटी।



क्यों-क्यों



क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:
अन्तरिक्ष में लोग क्यों जाते हैं? और जब जाते हैं,
तो वहाँ नहाते कैसे हैं और सू-सू पाँटी जैसी ज़रूरी चीज़ें
कैसे करते हैं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ
तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:
कुछ लोग नींद में बोलते हैं। लगभग सभी लोग कभी
ना कभी ऐसा करते हैं। क्या तुमने किसी को नींद में
बात करते हुए सुना है? क्या सुना है? तुम्हें क्या
लगता है कि लोग नींद में क्यों बोलते हैं?

क्यों-क्यों में नवम्बर -दिसम्बर अंक का हमारा सवाल
क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पर लम्बे
समय तक इन्तजार करना पड़ा है? इस दौरान
तुमने क्या-क्या देखा? क्या अच्छा लगा और क्या
बुरा, और क्यों?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर
या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर
सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चंकंमंक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चन कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

चित्र: दिव्यांशी सिसोदिया, पाँचवीं,
एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन
केन्द्र, गजपुर, नर्मदापुरम, उत्तर प्रदेश

यशवी, सातवीं, रमणा विद्यालय, शोलिंगनल्लूर, चेन्नई, तमिलनाडु

मेरे खयाल से अन्तरिक्ष में लोग ग्रह को छूने व
देखने जाते हैं। वे नहाते नहीं होंगे क्योंकि उन्हें
नहाना पसन्द नहीं है। सू-सू, पाँटी तो वे डाइपर
में करते होंगे। और ज़रूरी चीज़ जैसे खाना-पानी
को वे जमा देते होंगे। और वे कपड़े भी नहीं
बदलते होंगे क्योंकि उन्हें सफाई पसन्द नहीं है।

बंटी, छठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाड़ा, करनाल, हरयाणा

अन्तरिक्ष में इसलिए जाते हैं क्योंकि उन लोगों को
रिसर्च करना होता है या कुछ नया जानना होता
है। पाँटी व सू-सू करने के लिए उनके कपड़ों में
ही मशीन लगी होती है। अगर उनके कपड़ों में
बदबू आने लग जाए तो वे दूसरे कपड़े बदल लेते
हैं। और मशीन को दोबारा लगा देते हैं।

दिव्यांशी चौधरी, चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला,
ग्राम बिछुआ, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

संगीता, दूसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

क्योंकि उन्हें सब कुछ जानना है! तारे, चाँद, सूरज, मंगल, शनि – ये सब पास से देखने का मन करता है। वहाँ जाकर लोग सीखते हैं कि हमारी धरती के बाहर क्या-क्या है। और कभी-कभी तो वे सोचते हैं कि क्या हम वहाँ रह सकते हैं। मैं तो सोचती हूँ कि अगर मैं अन्तरिक्ष में जाऊँ, तो मैं अपने खिलौने भी ले जाऊँगी, और शायद एक छोटा-सा पिज़्ज़ा भी। अन्तरिक्ष में बाथरूम में बालटी-मग्गा नहीं होता! वहाँ पानी उड़ता है, नीचे नहीं गिरता। तो एक गीला कपड़ा लेकर शरीर को पोंछते हैं। और बाल धोने के लिए एक स्पेशल शैम्पू होता है, जिसके लिए पानी की ज़रूरत नहीं होती!

सोचो ज़रा, अगर पानी की बूँदें उड़ती हुई मुझसे बातें करने लगें तो?

वहाँ सू-सू और पॉटी कैसे करते हैं? ये तो सीक्रेट मिशन जैसा है! टॉयलेट वहाँ मशीन जैसा होता है। जैसे ही कोई बैठता है, मशीन ‘सॉउज़ड़SS’ करके सब खींच लेती है। वो सब कुछ हवा में उड़ न जाए इसलिए टॉयलेट पकड़ लेता है! मुझे लगता है अगर मैं पॉटी करूँ वहाँ, तो मुझे टॉयलेट खुद पकड़कर बैठा लेगा।

तो भैया, अन्तरिक्ष में जाना एक बड़ा मज़ेदार एडवेंचर है। उड़ना, घूमना, नहाना और पॉटी भी स्पेशल! मैं तो रॉकेट में बैठने के लिए तैयार हूँ।

पृथ्वी पर बहुत भीड़ हो गई है। तो लोग दूसरे ग्रहों पर यह पता लगाने जाते हैं कि वहाँ रहा जा सकता है या नहीं।

मार्टिण राव गायकवाड़, तीसरी, सेंट जॉर्ज़ स्कूल, धार, मध्य प्रदेश

अन्तरिक्ष में लोग सर्वे या खोज करने जाते हैं। मेरे को दो अन्तरिक्ष कम्पनियों के बारे में पता है – एक है नासा और दूसरी इसरो। नासा अमेरिका की कम्पनी है और इसरो भारत की। ये दोनों ही खोज करने एस्ट्रोनॉट्स को भेजती हैं – चाँद या अलग-अलग ग्रहों पर। वे एक जैल अपने हाथ-पैरों व बालों में लगाते हैं। उनके पास एक थैली रहती है जिसमें वे पॉटी करते हैं और डिब्बे में सू-सू करते हैं।



चित्र: रायन चौधरी, पाँचवीं, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

ऋग्मक

25

सितम्बर 2025

चित्र: इनान, तीसरी, कार्बेट, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



लक्ष्मी, पहली, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मैं जब अन्तरिक्ष में जाऊँगा तब बताऊँगा।

अर्चना ध्रुव, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला, ग्राम कानाकोट, बलौदा बाजार. छत्तीसगढ़

अन्तरिक्ष में लोग आपदा प्रबन्धन जानने के लिए जाते हैं। वहाँ लोग आसपास की दुनिया के बारे में जानने, मौसम की जानकारी लेने, नए संसाधन खोजने और अपने अस्तित्व को बेहतर बनाने की खोज करने के लिए जाते हैं। वहाँ अन्तरिक्ष में सब कुछ उड़ता है, जैसे कि खाना, कपड़ा, पानी आदि। अन्तरिक्ष यात्री नहाते नहीं हैं, बल्कि अपने शरीर को स्पंज से पोंछ लेते हैं। पेशाब करने के लिए एक नली होती है जिसके सिरे पर कीप लगी होती है। और टॉयलेट करने के लिए एक छोटी-सी टॉयलेट बनी होती है जिसमें वो लोग पॉटी करने जाते हैं।

कविता, दूसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

लोग अन्तरिक्ष में चाँद-तारे देखने जाते हैं। जैसे हवाई जहाज़ में शौचालय होता है वैसे ही अन्तरिक्ष यान में भी शौचालय होता है। तो लोग आराम से सु-सु, पॉटी करते हैं।

जिज्ञांशु सेठिया, तीसरी, अङ्गीम प्रेमजी खूल, धमतरी छत्तीसगढ़

अन्तरिक्ष में लोग बहुत सारी जानकारी लेने जाते हैं। वे अलग-अलग ग्रह, उपग्रह, तारों के बारे में जानकारी इकट्ठा करके पृथ्वी पर भेजते हैं। और अन्तरिक्ष में भेजी गई जो मशीनें खराब होती हैं, उन्हें बनाते भी हैं। अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्ष में नहीं नहाते क्योंकि वहाँ पानी नहीं होता। यदि पानी लेकर जाएँ तो भी नहीं नहा सकते क्योंकि वहाँ ग्रेविटी नहीं है। यदि पानी ऊपर डालेंगे तो पानी इधर-उधर उड़ेगा। सू-सू लगने पर यान के अन्दर ही एक पाइप में करना होता है, जो सीधा एक टंकी से जुड़ा होता है। और पॉटी करने के लिए खुद को टॉइलेट सीट से बाँध लेते हैं क्योंकि खुद भी उड़ते रहते हैं। पॉटी करने के बाद सीट में लगा पाइप पॉटी को खींचकर एक टंकी में डाल देता है। और उसे धरती पर आकर खाली कर देते हैं।

सरस्वती, छठवीं, अःजीम प्रेमजी स्कूल, बाडुमेर, राजस्थान

मुझे लगता है कि लोग अन्तरिक्ष में इसलिए जाते हैं क्योंकि वे यहाँ रह-रहकर बोर हो चुके हैं। और यहाँ पर गन्दगी मचाने के बाद वे अन्तरिक्ष को भी गन्दा करने गए हैं। कुछ लोग अन्तरिक्ष में नई चीज़ें जानने के लिए भी जाते हैं। और वे खाना, नींद ना आने वाली गोली, स्पेस सूट आदि जैसी कुछ ज़रूरी चीज़ें अपने साथ ले जाते हैं। वहाँ पर उन्हें बहुत दिक्कत होती है। लेकिन वे अपना काम करके वापिस आ जाते हैं।

कातिकिय सिंह, छठवीं, स्वतंत्र तालीम,
आशियाना सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अन्तरिक्ष में लोग इसलिए
जाते हैं क्योंकि पहले
जो रॉकेट गए होते हैं वो
अन्तरिक्ष में टूट गए होते हैं।
तो उनका मलबा ढूँढने जाते
हैं। वो नहाना और सू-सू
पॉटी रॉकेट में ही करते हैं।
नहाने व सू-सू, पॉटी करने
के लिए रॉकेट में अलग-
अलग केबिन होते हैं।

चित्रः समय, तीसरी, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



માધવી પ્રજાપતિ, ચૌથી, પ્રાથમિક શાળા, માઝાપારા, દેવગઢ, સરગુજા, છત્તીસગढ

अन्तरिक्ष में लोग तारा देखने जाते हैं। जब जाते हैं तो रास्ते में बादल से जो बारिश होती है उसमें नहाते हैं और उसी में पॉटी व सु-सु भी करते हैं।



चित्रः इनान नन्दा, तीसरी, कार्बेट, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

લક્ષ્મિ
27
સિત્મબર 2025

सुडोकू 88

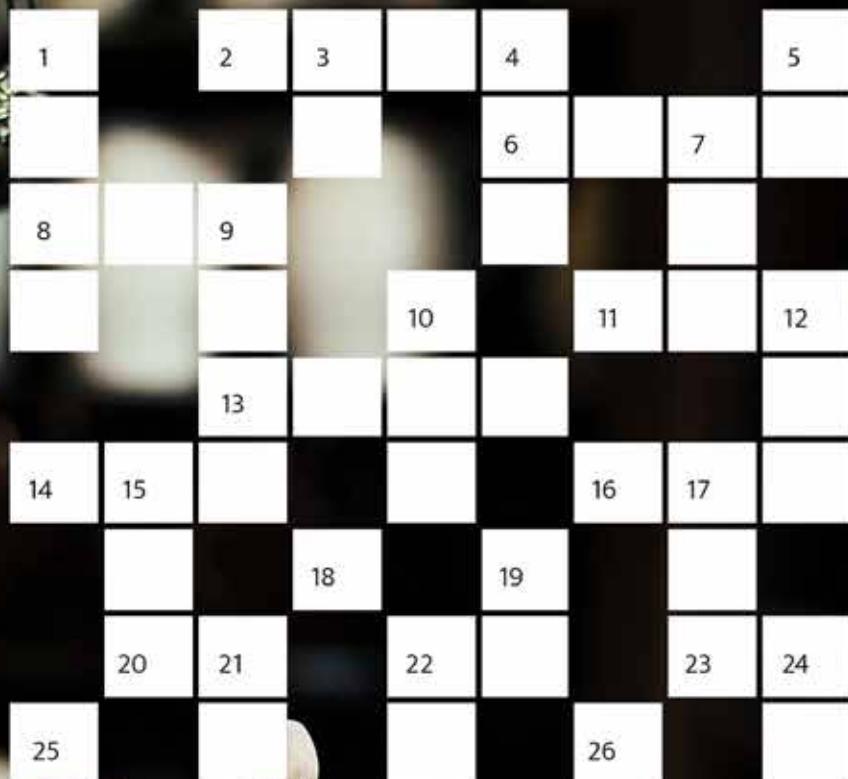
		1	4	7		9	5	8
7	6			1				4
8	4	5			9			6
	8		7	6			4	
	1	4		9	3	2	8	7
5	2	7		8		6		
		6	9	2				
4	7	2					3	
1	9	8	3			5	6	2

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



बाँ से दाँ
ऊपर से नीचे

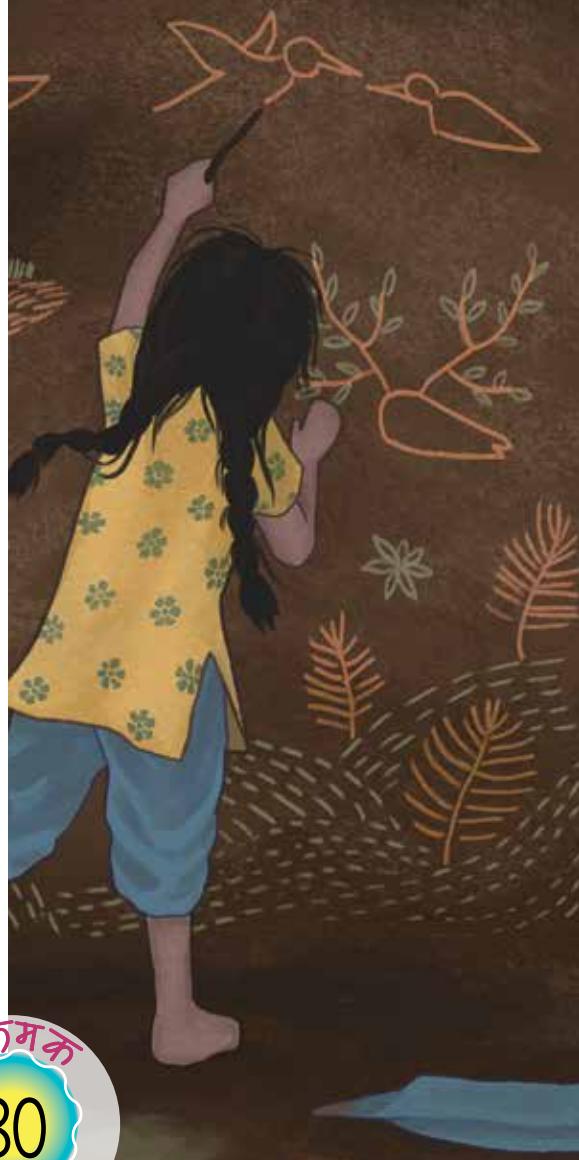
चित्र पहेली



अब तक तुमने पढ़ा...

ननकी को बचपन से ही चित्र बनाना बेहद पसन्द था। वह जहाँ-तहाँ चित्र बनाया करती — आटे, कोयले, पेंसिल-चॉक आदि से। जब स्कूल की एक शिक्षिका ने उसे शहर ले जाकर पढ़ाना चाहा, तो पूरा गाँव बिफर पड़ा। उनके तानों से तंग आकर ननकी अकेले ही जंगल की ओर दौड़ पड़ी। वहाँ उसका साथी बना — चोरू। एक दिन चोरू बुरी तरह घायल हो गया। ननकी ने उसकी खूब देखभाल की।

अब आगे...



अगले दिन ननकी फिर काम में जुट गई। वह तब तक चित्र बना सकती थी जब तक कि उसके हाथ न दुखने लगें। कभी-कभी वह मानसून के आने के बारे में सोचती और उसका इन्तजार करती। उसे पता था कि बारिश के बाद वह फिर से सब कुछ शुरू कर सकेगी।

इस दौरान चोरू भी धीरे-धीरे ठीक हो रहा था। लैंगड़ाते हुए वो चट्टान से बने ओटले के किनारे पर बैठ जाता और ननकी को काम करते देखता रहता। शाम को वो उसके बगल में गुड़ीमुड़ी होकर सो जाता। उसकी गर्दन पर बना पट्टे का निशान बना अब हल्का पड़ गया था। और उसका घाव भी ठीक हो रहा था।

पूरी तरह ठीक होने के बाद वो लम्बे समय के लिए दूर जाने लगा था। शुरू-शुरू में ननकी को उसकी बहुत चिन्ता होती थी। फिर धीरे-धीरे वह इसकी आदी हो गई। एक दिन चोरू उसके लिए एक पत्थर लेकर आया। वो पत्थर ननकी की हथेली से बस थोड़ा ही बड़ा था। गुलाबी धारियों वाला वह पत्थर आसपास के पत्थरों जैसा बिलकुल नहीं दिख रहा था। ननकी जानना चाहती थी कि ये पत्थर आया कहाँ से है। उसने उस पत्थर पर दो लम्बी आकृतियाँ बना दीं — एक की दो चोटियाँ थीं और दूसरी, थोड़ी छोटी वाली आकृति के नुकीले कान थे। उसने पत्थर चोरू को दिखाया। चोरू ने चिप की आवाज़ निकाली और पत्थर को अपने पास रख लिया।



बड़ी होने पर ननकी अक्सर उस पल को याद किया करती। वह सोचती – काश मैं अपनी पूरी ज़िन्दगी जंगल में बिता पाती। तब शायद मैं उस जगह को भी ढूँढ़ लेती जहाँ गुलाबी पत्थर मिलते हैं।

फिर गर्मियाँ आईं, बेरहम गर्मी जो नदियों को सुखा देती है और चेहरों को कुम्हला देती है। अब ननकी सिर्फ रात में ही चित्र बनाती थी। चाँदनी में, जब तापमान थोड़ा कम हो जाता था। एक दिन चोरु ने उसे अलसुबह बाल खींचकर जगा दिया। घने जंगल में से गड़गड़ाहट की आवाज आ रही थी। उतनी ही ज़ोरदार आवाज जितनी ननकी ने अपने बचपन में आए भूकम्प के समय सुनी थी, जब टांड से टोकरियाँ गिर गई थीं और उनमें रखे बर्तन

लुढ़कते हुए ज़मीन पर आ गिरे थे। वह चट्टानों के ऊपर चढ़ी। उसने देखा कुछ दूरी पर मशीनें चरमराने की डरावनी आवाजें निकाल रही थीं। वह पेड़ों को इतनी फुर्ती-से गिरा रही थीं, जितनी फुर्ती से बन्दर मेवे निगलता है।

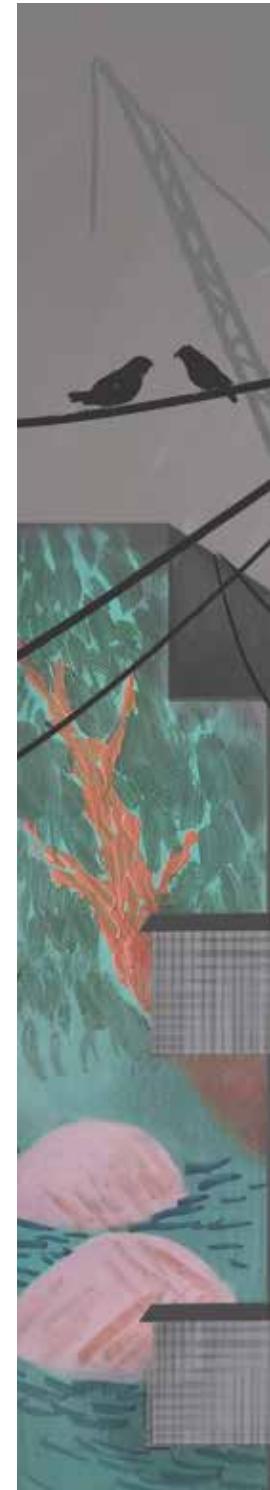
उर के मारे वे दोनों भाग खड़े हुए। कुछ घण्टों बाद, वे एक सड़क पर पहुँच गए। मशीन का शोर नज़दीक आता जा रहा था। सड़क के दूसरी ओर एक खड़ी ढलान थी जिस पर थोड़े-से पेड़ थे। नीचे तलहटी में एक नदी बह रही थी और उनके सामने वाली ढलान पर लगभग उतना ही घना जंगल था, जितना कि वे अभी-अभी छोड़ आए थे।

ननकी और चोरु की दुनिया

लॉरेस हूग

चित्र: नन्दिनी लाल

अनुवाद: सुशील जोशी



चोरु टहनियों को पकड़-पकड़कर ढलान उतरने लगा। ननकी बस देखती रही। वह उसका साथ नहीं दे पा रही थी। चोरु पीछे मुड़ा और चिप-चिप करके उसका हौसला बढ़ाने लगा। मानो कह रहा हो, उस तरफ पहुँच जाएँगे तो एक बार फिर शान्ति से रहेंगे। ननकी ने दुपट्टे से अपनी आँखें पोंछीं और बोली, “चोरु, अब तुम अपने रास्ते जाओ, मैं अपने।” उसकी मुट्ठी में गुलाबी पत्थर था।

चलते-चलते ननकी सड़क पर पहुँच गई। वहाँ उसे एक ट्रक ड्राइवर ने देखा – फटेहाल, नंगे पैर और कमज़ोर। ननकी को देख उसे अपनी तीन बेटियों की याद आ गई। उसने ट्रक रोका, ननकी को कुछ खाने को दिया और उसे पास के शहर तक छोड़ने की पेशकश की। ननकी मान गई।

ट्रक की खिड़की में से उसने देखा कि ज़ंगल पीछे छूटता जा रहा है और इमारतें पास आती जा रही हैं।

शहर पहुँचकर उसे काम ढूँढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। रिक्शों और ट्रकों के ऊपर चित्र बनाने वाली एक वर्कशॉप की मालकिन ने उसे रहने की जगह और चित्रों में रंग भरने का काम दिया। दिन में वह रिक्शों के किनारों पर बेलबूटे और हाथियों के चित्र बनाती और रात में वर्कशॉप के एक कोने में सो जाती। उसने शुरुआत अपने पीछे की दीवार पर पेंटिंग से की। फिर उस गैरेज के दरवाजे पोते जहाँ वह काम करती थी। जब बाकी लोग दीवाली मना रहे थे, वह अपने ब्रश लेकर चित्र बना रही थी।

एक दिन उसे रेल की पटरी के किनारे बनी लकड़ी की एक बाड़ दिखी। अपना काम खत्म करते ही, वह वहाँ चली जाती

और पेंटिंग करने लगती। कुछ समय बाद लोग रुककर उसे पेंटिंग करते देखने लगे।

बाड़ पर बनी पेंटिंग में पेड़ों की शाखाएँ आपस में लिपटी हुई, हिरन नदी में तैरते हुए और सींगों वाली मछलियाँ आकाश में उड़ती नज़र आतीं। जैसे-जैसे पेंटिंग आगे बढ़ी, ज़ंगल अजीबोगरीब आकार लेने लगे और जानवर रूप बदलने लगे। लेकिन एक आकृति बार-बार उभरती थी – गुलाबी चट्टान पर बैठा लाल पट्टे वाला एक बन्दर, जो राहगीरों को घूरता रहता।

आज ननकी मशहूर है। रेल की पटरी के किनारे बने उसके चित्रों ने पहले पत्रकारों का ध्यान खींचा, फिर कला विथिकाओं का। अब वह रिक्शों पर चित्रकारी नहीं करती है। वह शहर-शहर, दुनिया भर में जाती है और सैकड़ों मीटर लम्बी दीवारों, इमारतों की दीवारों, सार्वजनिक भवनों पर पेंटिंग बनाती है। आखिरी बार जब वह अपने माता-पिता के घर गई थी तो मुखिया ने हार पहनाकर उसका स्वागत किया था, लेकिन उसने मुँह फेर लिया था। अब उसकी माँ अपनी दवाइयाँ खरीद सकती हैं, और उसके पिता सुकून का जीवन जी रहे हैं।

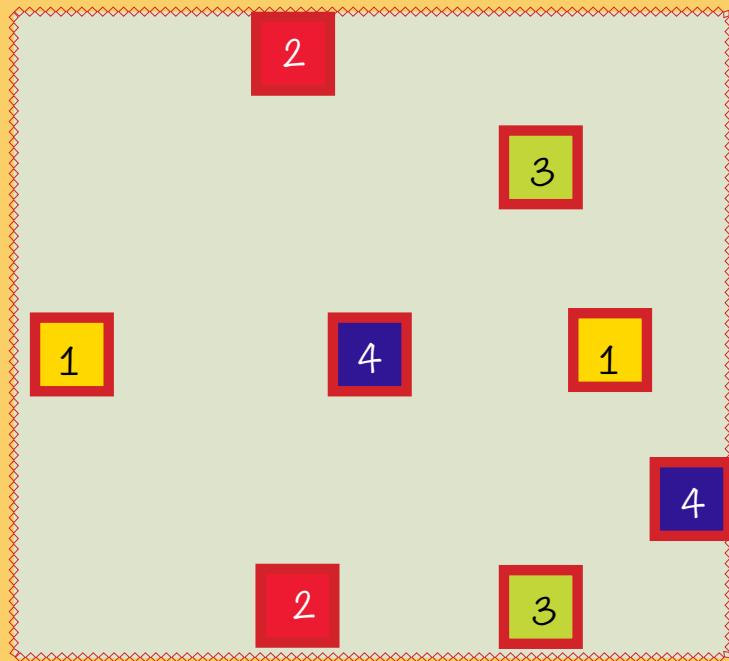
कहानी यहाँ खत्म हो सकती थी, लेकिन ननकी के चित्रों में एक राज़ है। एक ऐसा राज़ जिसके बारे में वे लोग भी बात नहीं करते, जो उसकी चित्रकारी से सज्जित इमारतों में रहते हैं। या जो रात में उसके द्वारा बनाए गए चित्रों के किनारे-किनारे चलते हैं। जब पूनम का



चाँद उसके चित्रों को रोशन करता है, तब हवा पत्तियों के बीच से बहने लगती है, झाड़ियाँ सरसराती हैं, जानवर हरकत करने लगते हैं। कभी-कभी तो दहाड़ने की आवाज़ भी सुनाई देती है।

और हमेशा, हाँ हमेशा, अलसुबह सुनाई देती है एक बन्दर की चिप-चिप। हर दिन जंगल उजाड़ा जाता है, और हर दिन ननकी उसे शहरों में फिर से जीवित कर देती है।

1. समान रंग वाले बॉक्स को जोड़ो, पर शर्त ये है कि तुम्हारी लाइनें एक-दूसरे को काट नहीं सकतीं।



2. दो ऐसी संख्याएँ हैं जिन्हें गुणा करो तो एक-अंकीय और जोड़ो तो दो-अंकीय संख्या मिलती है। तुम्हें पता है ये दोनों संख्याएँ?

3. “मैं लड़का हूँ,” काले बालों वाले बच्चे ने कहा।
“मैं लड़की हूँ,” भूरे बालों वाले बच्चे ने कहा।
यदि दोनों में से कम से कम एक झूठ बोल रहा हो तो बता सकते हो कि दोनों में से लड़का कौन है और लड़की कौन?



एक बिल्ली का मुँह उत्तर दिशा में है और दूसरी का दक्षिण में। क्या वो दोनों एक ही प्लेट से खाना खा सकती हैं?

5. रिया और जेन ने बैडमिंटन के 5 मैच खेले। दोनों ने बराबर-बराबर मैच जीते और कोई भी मैच बराबरी पर नहीं छूटा। ऐसा कैसे हो सकता है?

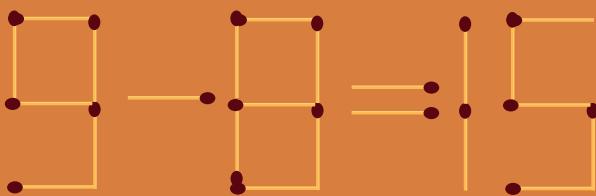
6. अयान, विकी, रिया, अहाना और मिली के जन्मदिन सोमवार से शुक्रवार के बीच लगातार आते हैं। अयान का जन्मदिन मिली से दो दिन पहले आता है और विकी का जन्मदिन अहाना के जन्मदिन के दो दिन बाद। रिया, अहाना से दो दिन बड़ी है और मिली का जन्मदिन गुरुवार को है। इसके आधार पर बताओ कि किसका जन्मदिन किस दिन है?

7. दी गई श्रिड में कई सारे फलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

इ	आ	चै	री	श	अ	म	का	बे
क	म	र	ख	ह	अं	ख	जू	र
जं	फा	ली	ची	तू	गू	र	रो	जी
ग	ल	दा	कू	त	र	बू	ज़	ट
ल	सा	अ	ना	ना	स	जा	आ	इ
ज	के	प	बा	रि	भ	सिं	मु	पा
ले	ला	पी	बे	य	शी	घा	से	न
बी	सी	ता	फ	ल	की	डा	ब	गो
मा	ल्टा	की	वी	आ	लू	बु	खा	रा

काथा चवी

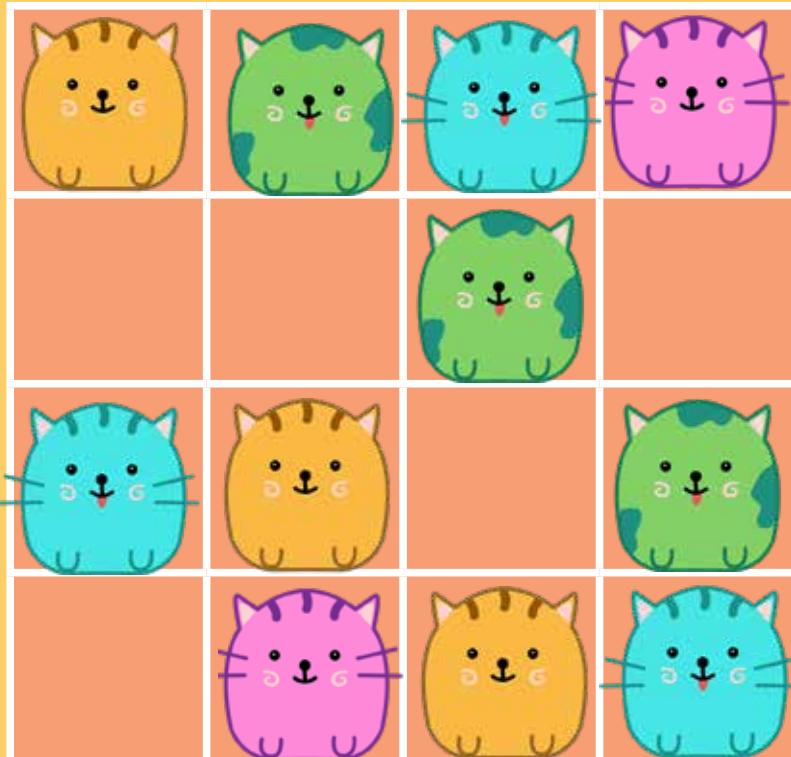
8. केवल एक तीली को इधर-उधर करके दिए गए समीकरण को सही करो।



9. प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

10. दी गई शिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बिल्ली आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी बिल्ली आएगी?

83	11	2
79	??	7
68	14	5



फटाफट बताओ

ऐसा क्या है जो जितना ज्यादा हो, उतना ही कम दिखाई देता है?

(प्रश्न)

दो हाथों में 10 ऊँगलियाँ हैं, तो 10 हाथों में कितनी ऊँगलियाँ होंगी?

(ठिक)

तीन पैर की चम्पा रानी रोज़ नहाने जाती दाल-भात का स्वाद न जाने कच्चा आटा खाती

(चंग)

उल्टा करके ताप चढ़ाए सीधा करके पता बताए

(ठिक)

सफेद साड़ी वाली ऊँची एड़ी वाली

(मुष्ठान)

फल, फूल और मिठाई एक साथ तीनों भाई

(मृगान बालू)

अन्तिम दो पहेलियाँ मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम ज़िले के ग्राम मरोड़ा के शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में छठवीं कक्षा की छात्रा अवनी यादव ने भेजी हैं।

जवाब पेज 42 पर

गर्मी में हमारी हालत

जयश्री

तीसरी, प्राथमिक विद्यालय
धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं स्कूल में थी। हमारे स्कूल में बहुत गर्मी है। हमारे कुछ सहपाठी खिड़की पर टॅंगे हैं और कुछ चटाई पर बैठे हैं। लाइट भी नहीं आ रही है। गर्मी में हम सब शान्त बैठे हैं। कुछ बच्चे हाथ वाला पंखा हाँक रहे हैं। गर्मी में कुछ करने का मन नहीं कर रहा है। कभी लाइट आती भी है तो फिर चली जाती है। हम सबको गुरस्सा आ गई और हम बाहर चले गए।

रात में सपना

अविनाश

दूसरी, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं रात में जब सपना
देखता हूँ तो यही
सोचता हूँ कि
मेरे गंगानगर में कोई
कुत्ता-बिल्ली ना हों,
सिर्फ इन्सान हों। मुझे
शेर से बहुत डर
लगता है।





तेज़ बारिश

अनुष्का

छठवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान

यह बात तब की है जब मैं यूकेजी में पढ़ती थी। तब एक दिन इतनी तेज़ बारिश हुई कि घुटनों तक पानी ही पानी हो गया था। वैसे तो मेरा स्कूल पास में एक घर छोड़कर ही था। परन्तु मेरी कम लम्बाई के कारण मैं पूरी तरह झूब रही थी। इसलिए उस दिन मम्मी मुझे गोद में लेकर स्कूल जाने लगीं। लेकिन तभी पानी में एक खड़ा आया और

मम्मी उसमें गिर गई। मैं मम्मी की गोद में ही रोने लगी। मम्मी मुझे जल्दी से जल्दी स्कूल पहुँचा आई। स्कूल की छुट्टी तक पानी चला गया था। इसलिए मैं खुद ब खुद घर लौट गई। घर आकर देखा तो मम्मी के घुटने पर खूब चोट आ रखी थी। उसे देखकर तो एक बारी मैं सहम गई। परन्तु जब मम्मी हँसने लगीं तो मैं भी जल्दी ही उस हँसी में शामिल हो गई।

चित्र: चार्वा, एलकेजी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश



चित्र: अर्चना पिंगला, छठवीं, आश्रम स्कूल, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र (स्लैम आउड लाउड संस्था से प्राप्त)

मैं तुम्हारा साथ ढूँगी

सुहानी सुनील मावस्कर
सातवीं, आश्रम स्कूल खारी
धारणी, अमरावती, महाराष्ट्र

एक लड़की ने नदी से पूछा, “इतना उछल-उछलकर कहाँ जा रही हो?” नदी बोली, “मैं सागर से मिलने जा रही हूँ।” लड़की बोली, “पास ही मेरा घर है। उसको ना डुबा देना।” नदी बोली, “मैं तुम्हारा घर नहीं डुबाऊँगी। मैं तो सागर से मिलने जा रही हूँ। सागर से मिलना मेरा सपना है।” लड़की बोली, “तुम्हारा सपना पूरा करने में मैं तुम्हारा साथ ढूँगी।” नदी बोली, “वह कैसे?” लड़की बोली, “तुम बस बहते-बहते जाओ और सागर से मिल आओ।”

गर्भियों से बचने के लिए मैं, मेरे चाचू और मेरा डॉगी रोमी बोर की डिग्गी में नहाने जाते हैं। बोर के पानी से धान के खेतों में पानी लगाते हैं। मेरे पास पानी में मर्स्ती करने के वीडियो भी हैं। ज़मीन के नीचे से बहुत ठण्डा पानी आता है। इस साल रोमी डिग्गी में हमारे साथ नहीं होगा। रोमी जाड़ों में मर गया। और लाली पानी से डरता है। लाली हमारा नया डॉगी है।

गर्भियों में

आरोही अटवाल
पाँचवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल
नानकमत्ता, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड



चित्र: प्रिशा जैन, तीसरी, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

बिल्लियों के नाम

अनुष्का रोकाया
तीन साल, बेंगलूरु, कर्नाटका

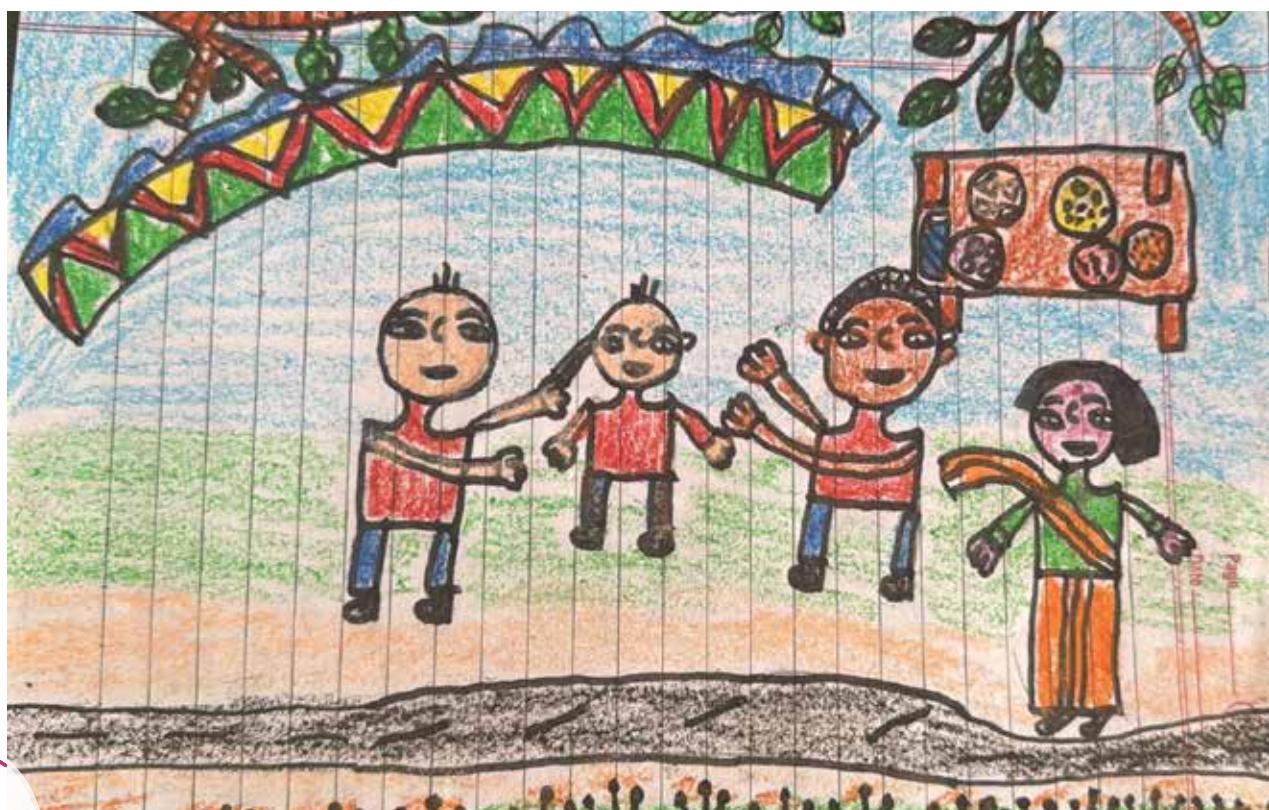
मेरी एक बिल्ली है।
उसका नाम बिल्ली है।
उसके पेट में बच्चे हैं।
आने वाली बिल्लियों के
नाम सोचने होंगे।

अनुष्का ने यह कहानी अपने भैया को सुनाई थी।



चित्र: आर्वा पैकरा, दूसरी, शान्ति विद्या निकेतन, बतौली, सरगुजा, छत्तीसगढ़

चित्र: औंशिका यादव, तीसरी, कम्पोनिट स्कूल, थम्माड, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



उड़ती साइकिल

शिवाय रस्तोगी

तीसरी, जिंगल बैल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं साइकिल लेकर निकला। जैसे ही मैंने पैडल मारा तो देखा कि साइकिल का पहिया इतनी तेज़ धूमने लगा कि साइकिल हवा में उड़ने लगी। मैंने उसको रोकने की कोशिश की पर वो रुकी ही नहीं। फिर मैंने सोचा इस बहाने मैं थोड़ा धूम ही लूँ। तो मैं देवकाली से चौक गया। वहाँ मैंने अपना पुराना घर देखा। फिर उधर से वज़ीरगंज गया। वहाँ से मैं फनलैंड गया। उधर मैंने बुर्ज खलीफा देखा। फिर एफिल टॉवर भी देखा। फिर मैं वहाँ से अयोध्या गया और राम जन्मभूमि देखी। तभी मेरा मन कहीं दूर जाने को ललचाया तो मैं गुजरात गया और दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' देखी। फिर मैं अचानक से घर आ पहुँचा तो मेरी मम्मी चिल्लाई,
“उठो, तुम स्कूल के लिए लेट हो रहे हो। तुम्हारी साइकिल बाहर आँगन में खड़ी है।”

साइकिल चलाना

फरहान

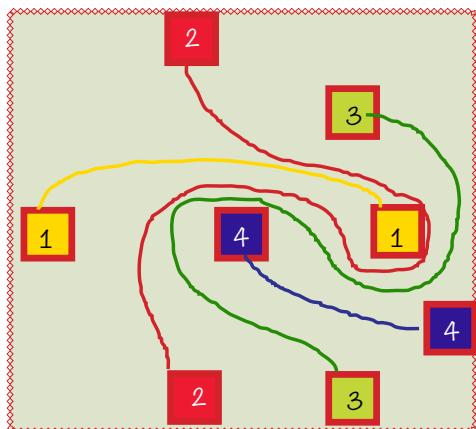
चौथी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय

महराया, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड

सन 2023 में मेरे भाई ने मुझे साइकिल चलाना सिखाया। तब मेरे पास मेरी साइकिल नहीं थी। तब मैंने भाई की साइकिल से चलाना सीखा। तब भाई ने साइकिल पीछे से पकड़ी और मैंने चलाई। अगले दिन मैं साइकिल खेत में लेकर गया। और वहाँ जब मैंने पहली बार साइकिल चलाई तो तभी मैं साइकिल चलाना सीख गया। फिर सन 2024 के अगस्त माह में मैंने पापा से साइकिल दिलाने के लिए कहा तो पापा ने कहा, “चल अक्टूबर में ले लेंगे।” फिर अक्टूबर में कहा, “अब नवम्बर में तेरी खाला की शादी है, तो साइकिल लेगा तो कपड़े कैसे लेगा। अब शादी के दो महीने बाद ले लेना।” अब फरवरी में भी नहीं दिला रहे हैं। पता नहीं मेरी साइकिल कब आएगी।

चित्र: रानी, दूसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, महराया, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड

1.



2. 1 व 9, क्योंकि $1 + 9 = 10$ और $1 \times 9 = 9$

4. हाँ, क्योंकि वो आमने-सामने बैठी हैं।

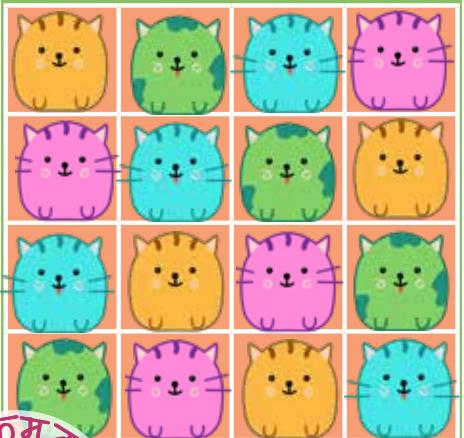
5. क्योंकि वे एक-दूसरे के साथ नहीं खेल रहे थे।

6. मिली - गुरुवार (दिया है), अयान - मंगलवार (मिली से दो दिन पहले), अहाना - बुधवार, क्योंकि यदि अहाना का जन्मदिन सोमवार या शुक्रवार को होगा तो रिया या विकी में से एक का जन्मदिन सोमवार से शुक्रवार के बीच में नहीं होगा। रिया - सोमवार (अहाना से दो दिन बड़ी) और विकी - शुक्रवार।

7.

इ	आ	चै	री	श	अ	म	का	बे
क	म	र	ख	ह	अं	ख	जू	र
जं	फा	ली	ची	तू	गू	र	रो	जी
ग	ल	दा	कू	त	र	बू	ज़	ट
ल	सा	अ	ना	ना	स	जा	आ	झू
ज	के	प	बा	रि	भ	सिं	मु	पा
ले	ला	पी	बे	य	री	घा	से	न
बी	सी	ता	फ	ल	की	ड़ा	ब	गो
मा	ल्टा	की	वी	आ	लू	बु	खा	रा

10.

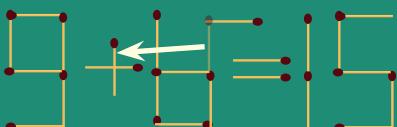


इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 ती	2 लौ	3 का	री	4 च	5 झू
त्री			प	6 क	हू
8 य	ती	9 ला		ला	टो
ता			डु		12 त
			10 म	11 य	रा
				12 त	
13 ट		मा	ट	र	
14 कू	15 क		र	16 क	17 टो
लौ					री
20 जी	21 रा	18 गी	19 लौ		
25 र		क		लहा	26 लौ
					रा

3. दोनों में से केवल एक के झूठ बोलने पर दोनों बच्चे या तो लड़का होंगे या लड़की। इसका मतलब है कि दोनों झूठ बोल रहे हैं। इसलिए काले बालों वाली लड़की और भूरे बालों वाला लड़का होगा।

8.



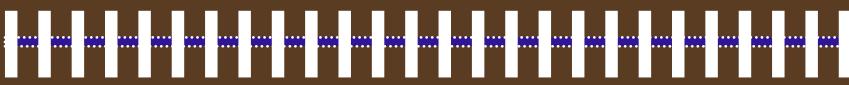
9.

83	11	2
79	16	7
68	14	5

सुडोकू-88 का जवाब

2	3	1	4	7	6	9	5	8
7	6	9	8	1	5	3	2	4
8	4	5	2	3	9	7	1	6
9	8	3	7	6	2	1	4	5
6	1	4	5	9	3	2	8	7
5	2	7	1	8	4	6	9	3
3	5	6	9	2	8	4	7	1
4	7	2	6	5	1	8	3	9
1	9	8	3	4	7	5	6	2

तुम भी जानो



अन्तरिक्ष में ट्रैफिक

अन्तरिक्ष में अब तक इन्सान 11700 से भी ज्यादा कृत्रिम उपग्रह भेज चुका है। इनमें से 1200 से भी ज्यादा तो महज 2025 में भेजे गए हैं। और यह संख्या लगातार बढ़ रही है। इन उपग्रहों को देशों की सरकार के अलावा कई कम्पनियाँ भी भेजती हैं। ये हमारे रोज़मर्रा के संवाद (मोबाइल, इंटरनेट), पृथ्वी के अवलोकन और शोध में काम आते हैं। उपग्रहों के अलावा अन्तरिक्ष में टूटे हुए उपग्रहों का कचरा भी पृथ्वी के चक्कर काट रहा है। ये उपग्रह आपस में ना टकराएँ और कचरे से बचकर रहें इसके लिए नासा (NASA) ने स्पेस ट्रैफिक मैनेजमेंट की एक टेक्नोलॉजी बनाई है। तो जैसे सड़कों पर गाड़ियों और आसमान में प्लेन की सुरक्षित आवाजाही के लिए ट्रैफिक कंट्रोल ज़रूरी होता है, वैसे ही अब अन्तरिक्ष में भी यह ज़रूरी हो गया है।

टूटने पर वयस्क दाँतों को अब खुद उगा पाएँगे...

दाँतों के टूट जाने या गिर जाने पर कई जानवर उन्हें दोबारा उगा सकते हैं। इनमें शार्क, कई किस्म के मेंढक और छिपकलियाँ भी शामिल हैं। लेकिन हम इन्सानों के साथ ऐसा नहीं होता। बचपन में दूध के दाँत टूटने के बाद जो दाँत उगते हैं उन्हीं से हमें जिन्दगी भर काम चलाना पड़ता है। इन दाँतों को खोने पर हमारे पास दो ही विकल्प होते हैं – या तो बिना दाँतों के जिएँ या फिर नकली दाँत लगाएँ। लेकिन अब शायद हम भी अपने खोए हुए दाँतों को खुद उगा पाएँगे। लन्दन की एक प्रयोगशाला में वैज्ञानिकों ने कुछ कोशिकाओं से इन्सान के दाँत उगाए हैं। अब चुनौती ये है कि इन कोशिकाओं को इन्सानों के मसूड़ों में सफलतापूर्वक कैसे विकसित किया जाए।

मृग

क्रकमक

43

सितम्बर 2025



मोटा मेंढक स्क सङ्क पर
कहता जाता था टर-टर-टर!
शाम हुई घिर रहा अँधेरा
बारह मील गाँव है मेरा
घर तक नहीं पहुँच पाऊँगा!
रस्ते में ही लुट जाऊँगा!

मोटा मेंढक

निरंकार देव सेवक

चित्र: कनक शशि

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन